तित्थयर

॥ जैन भवन ॥

वर्द्धमान महावीर माता त्रिशला की गोद में

वर्ष : २७ अंक : ५ अगस्त : २००३

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,

दर्शन से श्रद्धा होती है,

चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,

और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant

Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 2261001 (U.P.)
Ph: 242017/42397/42073 (05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 242790 (05862)

Registered Office

143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 2238-4329/ 8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office

2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 22201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 22200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २७ | अंक - ५, अगस्त | २००३

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, e-mail : jbhawan@cal3.vsnl.net.in

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन

श्रीमती लता बोथरा

।। जैन भवन ।।

Jainology and Prakrit Research Institute

Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007.

Phone-2268-2655. e-mail - jbhawan@cal3.vsnl.net.in.

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	कर्म की कहानी	पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी	२५१
२.	श्री चन्द्रराज चरित्र		२६५
३	समाचार सार		२८४
४.	संकलन		२८६

कवरपृष्ठ : स्वर्गीय हीराचन्द दुगड़ द्वारा चित्रित एवं श्री जयन्त दूगड़ के सहयोग से प्राप्त चित्र में भगवान् महावीर माता त्रिशला की गोद में।

Composed by:
Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

कर्म की कहानी

पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी

सामायिक दंडक सूत्र (करेमि भंते सूत्र) करेमि भंते सूत्र प्रतिज्ञा सूत्र हैं। जैन दर्शन में नमस्कार महामन्त्र को समर्पण सूत्र कहा है और करेमि भंते सूत्र को विरति सूत्र कहते हैं। तीर्थंकर परमात्मा जब संसार के सभी प्रकार के भौतिक सुख सामग्री त्याग करके सन्यास ग्रहण करते है, तब इस सूत्र का पाठ करके प्रतिज्ञा लेते है। साधु बनते समय गुरुदेव शिष्य को यही सूत्र द्वारा संसारी से साधु बनाते है। गृहस्थ जो २४ घंटे सांसारिक प्रवृत्ति में व्यस्त है, इनके लिए कुछ समय त्यागी जीवन जीने के लिए यानि सामायिक करने के लिये इस सूत्र द्वारा प्रतिज्ञा करना पड़ता है। ४८ मिनट का एक सामायिक होता है, जो गृहस्थ के बारह व्रत में से एक व्रत है। वैसे तो हर व्यक्ति को मुक्ति की कामना के लिए पूर्ण संसार त्याग की भावना रखनी चाहिए। पर जब तक परिस्थितिवश संसार त्याग न कर सके तब तक रोज एक सामायिक करने की भावना तो अवश्य ही रखनी चाहिए। यह सामायिक व्यस्त सांसारिक जीवन से ४८ मिनट के लिए मुक्ति दिलाने का एक अपूर्व साधन है। इसमें मानसिक शांति मिलती है। जैसे कठोर श्रम के बाद शरीर को कुछ समय के लिए विश्रान्ति की आवश्यकता होती है, वैसे ही अविरति मानसिक श्रमकारी व्यक्ति को कम से कम २४ घंटे में ४८ मिनट मन को विश्रान्ति देने की आवश्यकता है। इससे मन का उद्वेग दूर होता है, और साधु धर्म के प्रति हमारी भावना प्रबल होती है। शास्त्र में कहा गया है कि ४८ मिनट का एक सामायिक करने वाला ९२,५९,२५,९२५ पल्योपम देवलोक का आयुष्य बन्ध करता है। संवरभाव साधना के कारण नये कर्म बन्ध के कारणों से दूर रहता है और पुराने कर्म् का नाश करता है।

शास्त्रीय नाम– सामायिक दंड सूत्र।

लौकिक नाम– करेमि भंते सूत्र।

विषय—समस्त पापकर्म को त्याग करके समभाव में स्थिर रहने की प्रतिज्ञा। राग-द्वेष विषय-कषाय की विषमता दूरकर सुख-दुःख के प्रति समभाव रखकर जीवों के प्रति कटुता को त्याग करके मधुर परिणाम लाने का साधना सूत्र है।

सारांश—अतिदुर्लभ मानव जीवन में एकमात्र विरति धर्म की साधना ही उत्तम है। पाप क्रिया करने का अवकाश तो हरजीवन और जन्म में है। मानव जीवन में ही एक मात्र त्याग की प्रक्रिया अपना सकते हैं। अधिक शक्ति न हो सके तो ४८ मिनट तक मन-वचन-काया से पाप कर्म न करना, न कराना। इस सूत्र में हो गये पापकर्मों का पश्चाताप, एवं निन्दा की गई।

मूल सूत्र—

करेमि भंते !
सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि,
जाव नियमं पज्जुवासामि,
दुविहं, तिविहेणं,
मणेणं, वायाए, काएणं,
न करेमि, न कारवेमि,
तस्स भंते।
पडिक्कमामि, निन्दामि, गरिहामि,
अप्पाणं वोसिरामि।।

शब्दार्थ—

करेमि	-	करता हूँ।
भंते	-	हे भगवान।
सामाइयं	-	सामायिक।
सावज्जं	-	पापयुक्त।
योगं	-	योगो का।
पच्चक्खामि	-	पच्चक्खान करता हूँ।
जाव	-	जब तक।
नियमं	-	नियम को।
पज्जुवासामि	-	आराधना करता हूँ।
दुविहं	-	दो प्रकार से।

तिविहेणं	-	तीन प्रकार से।
मणेणे	-	मन से।
वायाए	-	वचन से।
कायेणं	-	काया से।
न करेमि	-	करुंगा नहीं।
न कारवेमि	-	कराउंगा नहीं।
तस्स	-	उसका।
पडिक्कमामि	-	प्रतिक्रमण करता हूँ।
निन्दामि	-	निन्दा करता हूँ।
गरिहामि	-	गर्हा-भर्त्सना करता हूँ।
अप्पाणं	-	आत्मा को।
विसिरामि	-	पापों से विश्राम कराता हूँ।

भावार्थ– हे भगवान! मैं सामायिक (समभाव की साधना) करता हूँ। उस समभाव की साधना के लिए मैं पाप क्रिया का त्याग करता हूँ। जब तक मैं मेरा यह (सामायिकभावना) नियम का पालन करता हूँ, तब तक मैं दो प्रकार और तीन प्रकार अर्थात मन-वचन-काया से पाप क्रिया नहीं करूंगा और नहीं कराऊँगा।

हे भगवान्! भूतकाल में जो पापकर्म किया हूँ, उसका प्रतिक्रमण करता हूँ निन्दा करता हूँ, गर्हा (भर्त्सना) करता हूँ, और पाप स्वरूप मेरी आत्मा का त्याग करता हूँ।

विवेचन– जैन दर्शन में सामायिक का विशेष स्थान है, सामायिक यानि समभाव की साधना। समभाव प्राप्त करने की प्रक्रिया। जब तक आत्मा समभाव को प्राप्त नहीं करती है तब तक सभी क्रिया निष्फल, अल्पफलदायी या विपरीत फलदायिनी होती है। समभाव के बिना शुद्ध क्रिया विकृत रूप धारण कर लेती है। जैसे– तपसे क्रोध, ज्ञान से अहंकार, क्रिया से निन्दा का जन्म हो जाता है। इस सब क्रिया में समता न हो तो व्यर्थ है। तप, ज्ञान, क्रिया, मोक्ष का दायक है, पर इनके साथ समता का समावेश अनिवार्य है। राग-द्वेष, विषय-कषाय, काम-क्रोध, अहंकार विषय स्थिति में डालता है। पूर्व कालीन शुभाशुभ कर्म सुख-दुःख के अनुभव में स्वयं को

भुला देता है। अनादि कालीन कुटिल संस्कार के कारण निन्दा में आनन्द आता है। वे सभी दोष सामायिक की साधना से दूर किये जा सकते है।

सामायिक करते समय विश्व के सभी सम्बन्धों को तोड़ दिया जाता है। विषमता का कारण दूर होते ही आत्मा में स्वरूप प्रकाशित होने लगता है। समभाव साधना के लिए सामायिक प्रतिज्ञा-सूत्र को सामायिक दंडक सूत्र कहते है।

एक सामायिक व्यवहारिक समय के आधार पर ४८ मिनट (दो घड़ी) का होता है। गृहस्थ के लिए 'जाव नियमं' अर्थात जब तक नियम लिया हो, सर्व त्यागी साधु-साध्वी के लिये इस शब्द के स्थान पर 'जाव जीवाये' अर्थात् आजीवन प्रतिज्ञा किया जाता है।

सामायिक लेने के बाद बड़ा प्रतिक्रमण, चौदसादि का प्रतिक्रमण, व्याख्यान के बीच में सामायिक न पारे, यहाँ पर धारणा कर लेवे कि आयोजित क्रिया की पूर्णाहुति पर मैं सामायिक पारुंगा। इस बीच में सामायिक पारने या लेने से मूल क्रिया में विक्षेप पड़ता है। दोनों क्रियाओं में एक भी क्रिया शुद्ध नहीं होती, और दोष भी लगता है।

सामायिक लेने के बाद पाप क्रिया स्वयं न करें, न करावे, मन-वचन-काया से न करें और न अन्य से करावे। परन्तु अनुमोदन क्रिया चालू होने से शुभ क्रिया का अनुमोदन करे। परन्तु सर्वत्यागी साधु-साध्वी के लिए तो अनुमोदन करना भी निषेध है। त्यागी को किसी भी आरंभ समारंभ का अनुमोदन करना निषेध है।

काया की शुद्धि से मन शुद्धि, मन शुद्धि से वचन शुद्धि और वचन शुद्धि से आचरण शुद्धि होती है।

सामायिक समापन सूत्र–

भूमिका– आर्य संस्कृति के परम आदि पुरुष, परमात्मा ऋषभदेव ने गृहस्थावस्था में सभी जीवों को मोक्षानुकूल होने के लिए अर्थ, काम, धर्म, मोक्ष वे चार पुरुषार्थ बताये है। इन सभी पुरुषार्थों का अन्तिम लक्ष्य मोक्ष ही रखा है। अर्थ और काम संसार या संसार विकास का कारण है। पर जब वे धर्म पुरुषार्थ के साथ मिल जाते हैं, तब मोक्ष का कारण बन जाते है। जैसे- अग्नि और पानी अनियन्त्रित अवस्था में जीवन का घातक बन जाते

है, पर इन्हें नियंत्रित करने पर ये मानव जीवन के लिए आशीर्वाद बन जाते हैं। इसीलिए अर्थ और काम का आचरण धर्म को केन्द्र बिन्दु में रखकर ही करना चाहिए। कोई भी क्रिया एक चित्त होकर तथा उस क्रिया की सभी दशाएं ध्यान में रखकर करनी चाहिए। चाहे वह धार्मिक हो या सांसारिक।

जयना (यातना) और उपयोग ही धर्म का मूल है।

करेमि भंते सूत्र में सामायिक व्रत प्रारंभ होकर इस सूत्र में समापन होता है। मन-वचन-काया को समभाव में स्थिर करना है, इन तीनों की विषमता समभाव को नष्ट करती है। सामायिक के समय में १० मन विषयक और १० वचन और १२ काया विषयक दोषों का उल्लेख किया गया है। फिर भी प्रमादवश किसी दोष का सेवन हो गया हो तो इस सूत्र द्वारा क्षमा मांगी जाती है। श्रावक को सामायिक बारंबार करना चाहिये। इससे पाप कर्म का नाश होता है। सामायिक व्रत में श्रावक साधु तुल्य बन जाते है।

शास्त्रीय नाम— सामायिक समापन सूत्र।

लौकिक नाम— सामाइयवयजुत्तो सूत्र।

विषय— सामायिक में हुई अविधि दोषों की क्षमापना तथा बारंबार सामायिक करने की प्रेरणा।

सारांश—यथा संभव अविधि करना ही नहीं, तदुपरान्त अज्ञानादि के कारण से कोई अविधि हो गई हो तो क्षमा याचना करना चाहिये। जिससे दोषमुक्त होते है। जानबूझकर तो अविधि करना स्वयं पर अन्याय है। स्वयं को अवसर प्राप्त होते ही साधु बनने की भावना से गृहस्थ को बारंबार सामायिक की आराधना करनी चाहिए।

सामायिक समता सागर में पहुँचने का सरल मार्ग है।

मूल सूत्र—

सामाइय-वयजुत्तो,
जावमणे होइ नियम-संजुत्तो ;
छिन्नइ असुहं कम्मं
सामाइआ जत्तिआ वारा ।।१।।
सामाइअंमि ओ कए,

समणो इव सावओ हवइ जम्हा,
एएण कारणेणं,
बहुसो सामाइअं कुज्जा ।।२।।
सामायिक विधि से लिया,
विधि से पारा,
विधि करते कोइ अविधि,
हुई हो तो मन-वचन-काया
से मिच्छामि दुक्कडं।।
दस मनके।
दसवचन के,
बारह काया के,
वे बत्तीस दोषों में कोइ,
दोष लगा होते वे सब,
मन-वचन काया से,
मिच्छामि दुक्कडं।।

शब्दार्थ—

सामायिक वय जुत्तो	-	सामायिक व्रत से युक्त।
जाव	-	जब तक।
मणे	-	मन।
नियम संजुत्तो	-	नियम से युक्त ।
छिन्नई	-	नाश करता है।
अखुहं	-	अशुभ ।
कम्मं	-	कर्म को ।
सामाइय	-	सामायिक ।
जत्तिया वारा	-	जितनी वार ।
सामाइअंमि	-	सामायिक के समय में ।
समणो इव	-	साधु जैसा ।
सावओ	-	श्रावक ।
हवइ	-	होता है।

जम्हा	-	इसीलिये ।
एएन कारणेणं	-	इस कारण से ।
बहुसो	-	बारम्बार ।
सामाइअ	-	सामायिक ।
कुज्जा	-	करना चाहिए।

अन्तिम दो गाथा का अर्थ सरल है, इसलिए यहाँ नहीं दिया गया है।

भावार्थ– यहाँ तक मन सामायिक नियम से युक्त है। वहाँ तक आत्मा सामायिक व्रतयुक्त कहलाता है। जितनी बार यह क्रिया होगी उतनी बार अशुभ कर्म का नाश होगा। सामायिक काल में श्रावक साधु जैसा होता है, इसीलिए बारम्बार सामायिक करना चाहिए।

सामायिक विधि प्रारंभ और पूर्णाहुति करने में कोई गलती हुई हो और १० मन, १० वचन, १२ काया सम्बन्धि कोई दोष लगा हो तो अन्त करण से क्षमा चाहता हूँ।

विवेचन—मनुष्य जीवन प्राप्त करके मोक्ष के अभिलाषी प्रत्येक व्यक्ति संसार त्याग करके साधुजीवन स्वीकार करने में समर्थ नहीं होते है। विभिन्न कर्मोदय के कारण गृहत्याग की उत्कृष्ट भावना होते हुए भी संसार में रहना पड़ता है। मात्र रहना ही नहीं, परन्तु सभी प्रकार की हिंसायुक्त सांसारिक क्रिया भी करना पड़ता है। इन बन्धनों से मुक्ति पाने की कामना वाले आराधक जब तक साधु जीवन नहीं ग्रहण कर सकते है, तब तक श्रावकों के व्रत नियम का पालन करना चाहिए। साधु के पाँच महाव्रत होते है जो संसार के सभी प्रकार हिंसा आरंभ-समारंभ से दूर रखता है। जो व्यक्ति इससे ग्रहण करने में असमर्थ होते है उनके लिए १२ व्रत का विधान है।

५ – अणुव्रत, ३ – गुणव्रत, ४ – शिक्षाव्रत। शिक्षाव्रत के अन्तर्गत प्रथम सामायिक व्रत आता है। सहज-सरल और अल्प कालीन होने से श्रावक को इस व्रत की आराधना अवश्य करना चाहिये।

सामायिक का उपकरण— सफेद धोती, खेरा, गरम आसन, मुंहपत्ति, चरवला, स्थापनाचार्य, या स्थापना के लिए नवकार-पंचिंदिय युक्त किताब, माला, स्वाध्याय के लिए अपनी इच्छानुसार किताबें,। सफेद रंग शांतिदायक होने से यहां पर सफेद वस्त्र ग्रहण किया गया है। सफेद रंग कषाय मन को

शांत करता है। आसन ऊनी होना चाहिए। ऊनी वस्त्र में जीव हिंसा कम होती है। इसके पास जीवादि आता नहीं है।

मुँहपत्ति— १६ अंगूल x १६ अंगूल एक तरफ किनारीयुक्त होना चाहिए।

चरवला— २४ अंगुली डांडी और ८ अँगुली ऊन की रेखा (दसी) होना चाहिए। स्त्रियों के लिये गोल डांडी का विधान है। डांडी के ऊपर शिखर होना आवश्यक है। सामायिक लेने के बाद चरवला बिना खड़ा होना या इधर उधर जाना निषेध है। काल संध्या या रात्री में खुले आकाश के बीच सामायिक करना निषेध है। सामाययिक में अगर खुले आकाश में जाना पड़े तो ऊनी वस्त्र ओढ़कर जाना चाहिए। अग्नि, स्त्री, (स्त्री के लिए पुरुष) सजीव वस्तु, सामायिक में स्पर्श करना निषेध है। सामायिक में सांसारिक क्रिया से मुक्त रहना चाहिए।

सभी प्रकार के दुःख, पाप, वासना से सम्पूर्ण मुक्त अवस्था को मोक्ष कहते हैं।

जब तक उक्त प्रकार की मुक्तावस्था को प्राप्त न करें, तब तक इस संसार में कर्मानुसार अलग-अलग स्थानों पर जन्म लेना पड़ता है, जहाँ जन्म है, वहाँ मृत्यु भी निश्चित है। इसी प्रकार जन्म मरण का चक्र चलता ही रहता है।

इस कष्टमय, असार संसार से मुक्त होने के लिए ज्ञानी वीतराग देव ने अनेक उपाय बताये है। इन उपायों में से अपनी योग्यतानुसार कोई भी एक को अपना कर व्यक्ति आत्म साधना मार्ग में आगे बढ़ सकते है।

"जिसका प्रारंभ अच्छा उसकी पूर्णाहुति अच्छी"

हमें अमूल्य मनुष्य जन्म मिला है, अपनी योग्यतानुसार साधन-सामग्री भी मिली है। इसमें भी उत्तम कुल, जाति, क्षेत्र, देव और गुरुदेव का योग मिला है। हम जीवन तो जी लेते है, पर जीवन की वास्तविकता से हम कोसों दूर हैं। मिले हुए साधनों का सदुपयोग करने में हम भूल करते हैं। जीवन जीने की एक कला है। कला विहीन जीवन नमक बिना भोजन जैसा है। हमारे आस-पास जीवन को परमानन्द की उत्कृष्टता तक ले जाने के

साधन तो एकाधिक है, पर या तो हम उन साधनों को पहचानते नहीं या फिर उन साधनों का सही प्रयोग करने में हम असफल रहते हैं।

हम कल्पना करें कि एक वाद्य यंत्र है। उसका स्वर मधुर कर्णप्रिय है, पर हम उस वाद्ययंत्र को बजाने में अकुशल है। उसे बजाने से पूर्व कहीं अधिक कस दिया या ढीला रख दिया, इस दोनों अवस्था में स्वर मधुर और आनन्द दायक नहीं हो सकता है इसके विपरीत अधिक कष्टकर भी हो सकता है। इसी प्रकार हमारा यह अतिमूल्यवान मनुष्य जीवन परमात्मा को पाने का मधुर यंत्र साधन है। अगर हम इस जीवन के वास्तविक रूप का प्रयोग करें तो अवश्य ही परम आनन्द की अनुभूति कर सकते है।

अनुभवी परमपुरुष जीवन को आनन्दमय बनाने के लिए कुछ उपाय बताये है। हर व्यक्ति के लिये कुछ उपाय बताये है। हर व्यक्ति को अपनी इच्छा और योग्यता के अनुसार जीवन प्रारंभ करने के लिये उपदेश दिये है।

(१) साधु जीवन (२) श्रावक जीवन

(३) सम्यक् दृष्टि जीवन (३) मार्गानुसारी जीवन।

साधुजीवन—संसार के मोह माया, स्त्री परिवार से मुक्त, अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि महानियम का पालन करना। भिक्षा से जीवन निर्वाह करना। एक स्थान पर अधिक समय तक नहीं रहना। रात्री भोजन का त्याग करना। वीतराग परमात्मा की आज्ञानुसार ही जीवन जीने का प्रयत्न करना। प्रमादवशः भूल हो जाय तो गुरुदेव से शुद्ध मनोभाव से प्रायश्चित करना। आत्मतत्व को उपलब्ध करने के लिए और वैराग्य स्थिर रखने के लिए अध्यात्म शास्त्र का पठन-पाठन करना। मानव समाज, जीवमात्र के कल्याण के लिए धर्म उपदेश देना। मोक्ष लक्ष्यी सभी प्रवृत्ति करना।

श्रावक जीवन— साधु जीवन जीने में असमर्थ व्यक्ति को श्रावक जीवन जीने का प्रयत्न करना चाहिए। पर हर श्रावक का लक्ष्य हो साधु-जीवन, संयम जीवन के बिना मुक्ति नहीं है। श्रावक १२ व्रत या अपनी शक्ति अनुसार कम व्रत परमात्मा के आज्ञानुसार पालन करें। सर्व त्यागी मुनि जो परमात्मा के संदेश वाहक है उनकी सेवा करें। सुसाधु की विशिष्ट सेवा करने के कारण ही श्रावक का दूसरा नाम श्रमणोपासक है। कषाय मुक्त होकर जीवन जीनें का प्रयत्न करें।

सम्यग् दृष्टि जीवन— व्रत-नियम सहित श्रावक जीवन जीने में असमर्थ व्यक्ति असत्य को त्याग करके विश्व के वास्तविक स्थिति को स्वीकार करना चाहिए। आवश्यकता से अधिक आरंभ-समारंभ न करें। परमात्मा भाषित परम तत्व को भारपूर्वक स्वीकार करें। सम्यग् दृष्टि जीव का एक सूत्र है– "तमेव सच्चं निसंकं च जं जिणेहिं पवेहि"।

मार्गानुसारी जीवन– सत्यमार्ग में चलने के लिए प्रयत्नशील व्यक्ति को मार्गानुसारी जीव कहते है। वैसे जीव उचित कार्य करने में प्रयत्न करते है। सत्पुरुष को यथायोग्य उनके कार्य में सहयोग करते है। दीन-दुःखी, अनाथ, असहाय के उपर दया करते है। अपने से कमजोर व्यक्ति जीव को सहयोग करते है। जीवन में अधिक से अधिक जनहित-परोपकार का कार्य करने की भावना रखते है।

जीवन में हमारे अड़ोस-पड़ोस की भली बुरी गतिविधि से कुछ न कुछ शिक्षा अवश्य मिलती हैं। मात्र हमारी देखने की दृष्टि होनी चाहिए। अपने जीवन को इतना पारदर्शी बनावे कि अन्य प्रतिबिम्ब अपने ऊपर अवश्य पड़े।

पारदर्शी पर एक प्रसंग— एक राजा थे वे अत्यन्त कलाप्रिय थे। एक बार उन्हें कुछ सुन्दर चित्र बनाने की इच्छा हुई। राज्य के अच्छे चित्रकारों को बुलाये। अनेक चित्रकारों में से दो सिद्धहस्त चित्रकारों का चयन किया गया। इन दोनों चित्रकारों को सभागार के आमने सामने की दो दिवाल पर चित्रांकन करने लिए सौंपा गया। चित्रकार एक दूसरे का नकल न करें इसलिये बीच में एक पर्दा डाल दिया गया। करीब छः महीने में कार्य सम्पन्न होने पर, राजा स्वयं चित्र देखने गये। चित्र देख कर राजा प्रसन्न हुए। अभी तो दूसरा चित्रकार का चित्र देखना बाकी था। मन भर कर इस चित्र को देखकर पर्दा के उपपार दूसरे चित्र को देखने के लिए गये। वहां जाकर एकद निराश हो गये क्योंकि वहाँ कुछ भी नहीं था। दीवाल साफ थी। पास में खड़ा चित्रकार मुस्करा रहा था। राजा बोले— चित्रकार! क्या आपने छः महीना तक यहाँ बैठे-बैठे दिन बिताये, अगर आप चित्रकार्य में असमर्थ थे तो इतने दिन राजकोष का दुरुपयोग क्यों किया। राजा को क्रोध आना स्वाभाविक था। चित्रकार बोले– राजन्! पर्दा हटाकर देखें, आपको इसका रहस्य पता

लग जायेगा और आश्चर्य हुआ पर्दा हटते ही सामने वाले सम्पूर्ण चित्र सुन्दर और आकर्षण होकर यहाँ उभर आया है। चित्रकार बोले—चित्र बनाना कठिन नहीं भूमि का तैयार करना कठिन हैं। जीवन भी ऐसा ही पारदर्शी होना चाहिए।

इस दृष्टान्त से एकबात स्पष्ट हो रही है कि भूमिका तैयार किये बिना जीवन सुन्दर और आनन्दमय नहीं बनाया जा सकता हैं। जीवन का मूल आधार आचरण है आचार ही जीवन है। वर्त्तमान में विश्व में दो धर्म की धारा है एक आस्तिक अर्थात् ईश्वर में विश्वास रखने वाले और दूसरे नास्तिक भगवान जैसी कोई वस्तु नहीं मानने वाले इन दोनों में छोटे बड़े मिलाकर विश्व में कुल चार हजार साप्रदाय हैं, पर सभी आचरण पर जोर देते है। विश्व का कोई भी धर्म चाहे उसका नियम कुछ भी हो सदाचार को अवश्य महत्वपूर्ण स्थान दिय हैं। एक सद्‌गृहस्थ बनने के लिए सदाचार पालन करना अत्यावश्यक है।

आन्तरिक सद्‌विचार तो व्यक्ति के स्वयं के जीवन में प्रभाव डालता है, पर आचार तो ब्राह्य वस्तु है इससे परिवार, समाज, धर्म, देश पर प्रभाव पड़ता है। जीवन को मार्गानुसारी बनाने के लिए प्राथमिक कुछ नियम अवश्य ध्यान में रखना चाहिए और उन नियमों को पालन करने का प्रयत्न करना चाहिए।

जीवन शुद्धि के क्रम में बताया है, आहार शुद्धि, आचार शुद्धि, विचार शुद्धि इस क्रम में जीवन का विकास होता है। प्राथमिक जीवन विकास के लिए यहाँ कुछ मार्ग दर्शन दिया गया है।

चार मुख्य मानविक गुण—

(१) पापभय (२) धर्म श्रवण

(३) कदाग्रह त्याग (४) त्रिवर्ग अबाधा।

ये चार गुण जीवन रूपी गाड़ी को चलाने में एक दूसरे के सहायक है। इनके द्वारा जीवन को भटकने से बचाया जा सकता है। पाप का भय जीवन रूपी गाड़ी का ब्रेक है। जिस प्रकार ब्रेक के विना गाड़ी का चलाना अनुचित है वैसे ही पाप का भय अगर जीवन में न हो तो जीवन कहाँ जाकर

रुकेगा कोई निश्चित नहीं है। उसी प्रकार अन्य बातें भी महत्त्वपूर्ण है। आगे सविस्तार इन सभी बातों का विवेचन किया जायेगा।

पापभय (पापभीरुता)— जिससे आत्मा, मन, शरीर, जीवन कलुषित हो उसे पाप कहते हैं। या जो व्यक्ति को पतन की ओर ले जाय उसे पाप कहते है। पाप के प्रकार तो अनेक है। यहाँ पर मुख्य मुख्य कुछ दर्शाया जा रहा है। आर्य संस्कृति जिनको पाप के रूप में स्वीकार किया है वैसे सात महापाप— (१) मद्यपान (२) मांसभक्षण (३) शिकार (४) जुआ (५) परस्त्रीगमन (स्त्री के लिये परपुरुष) (६) वैश्यागमन (७) चोरी।

वर्तमान स्थिति के सात भयंकर पाप—

(१) गर्भपात (२) विवाह (३) अन्तर्जातीय विवाह (४) सहशिक्षण (५) सिनेमा (६) उद्‌धृत वेष (७) शिक्षणालय में संस्कृतिहीन शिक्षा।

–भोजन विषयक सात भयानक पदार्थ– (१) शहद (२) मक्खन (३) कन्द-मूल (४) रात्री भोजन (५) द्विदल (६) बासी भोजन (७) होटल, पान, तम्बाकू।

ये तो सामान्य नाम दर्शाया गया है। इसके अतिरिक्त और भी ऐसे अनेक कार्य है जो तन, मन, शरीर और समाज को अधः पतन की ओर ले जा रहा हैं।

हमारी आर्य धर्म संस्कृति में दुःख का मूल कारण पाप को ही स्वीकार किया गया है।

"जो कायर है वे दुःख से डरता हैं, पर साहसी दुःख के कारणों अर्थात् पाप से हमेशा डरते हैं।"

साधक को अपने अन्तर जगत से साधना प्रारंभ करनी चाहिए। सर्व प्रथम साधक स्वयं निरिक्षण करें कि किन-किन कारणों से मेरा मन कलुषित है, या हो रहा है। आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति का मन कलुषित करने का कारण एक ही हो, या मन शांत करने कारण एक ही होगा। स्वयं अपनी आन्तरिक स्थिति को देखकर तदनुरूप साधना की भूमिका को तैयार करने का प्रयास करना चाहिए। पाप का सही परिचय हो जाने पर उसे त्याग करना अधिक कष्टकर नहीं होता है।

छोटी से छोटी पाप की प्रवृत्ति जीवन नष्ट करती है, इसलिए हमेशा जागृत रहना ही उचित है।

(२) धर्म श्रवण— जीवन में जागृत रहने के लिए, पाप दुष्कर्म से बचने के लिए हमेशा धर्म श्रवण या वांचन करना चाहिए। इस संसार में श्रवण दुर्लभ नहीं पर सत् शास्त्र या सदुपदेश का श्रवण दुर्लभ है। हम सभी दिन-रात सुनते है। निद्रा से जागृत करने का कार्य भी प्रायः सुनने के द्वारा ही होता है। सुनने के माध्यम से ही हममें राग-द्वेष, विषय कषाय की भी वृद्धि होती है। जीवन विकारमय बनता है। कभी-कभी एक / दो शब्द अपनी धारणा के प्रतिकूल सुनने के कारण महा अनर्थ हो जाता है। हमारे अनुभव में भी अनेक बार आया ही होगा कि कभी-कभी एक/आध प्रतिकूल शब्द सुनकर हम परेशानी में पड़ गये थे। इस स्थिति में अगर कोई व्यक्ति स्वयं को न संभाल पाये तो महा अनर्थकारी घटना घट जाती है। सत्-श्रवण से संसार के सत्य-असत्य का ज्ञान होता है। संसार में असंख्य पदार्थ है जिसमें कुछ जानने योग्य कुछ छोड़ने योग्य और कुछ ग्रहण करने योग्य पदार्थ है। जीवात्मा की विविध अवस्था के कारण कर्मसिद्धान्त का भी सुनने से ही ज्ञान होता है, और अपनी हीन बुद्धि नष्ट होती है। दुःख में जीने का साहस मिलता है तो दूसरी ओर सुख में अभिमान को रोकने की शक्ति मिलती है। सद् पदार्थ के प्रति श्रद्धा जगती है। माता-पिता गुरुजनों की सेवा मति जगती है। अपने कर्तव्य का ज्ञान होता है।

धर्म कोई अलौकिक वस्तु नहीं है। हमारे ही बीच में जीवन को सुव्यवस्थित करने का एक नियम है। धर्म सर्व प्रथम हमें कर्तव्य को सिखाता है। एक अर्थ में कर्तव्य ही धर्म है। संसार में अगर सभी व्यक्ति अपना-अपना कर्तव्य का पालन कर ले तो, संसार की सभी समस्याएँ स्वयमेव समाप्त हो जायेगी। आज सम्पूर्ण मानव समाज अधिकार के लिए युद्ध कर रहा है। धर्मज्ञान (कर्तव्य ज्ञान) से विश्व शांति की स्थापना हो सकती है।

एक बात और ध्यान में रखने योग्य है। अगर हमने सद् श्रवण नहीं किया तो कान अपने स्वभाव के अनुरूप कुछ न कुछ तो अवश्य ही सुनेगा, और जो बारम्बार सुनेगा उसीका आचरण करेगा। वहीं हमारे भीतर का संस्कार बनता जायेगा और हम वैसे ही बनते जायेगे। हमें फिर स्वप्न में वही दिखने लगेगें, जो दिन रात सुनेगें, सोचेंगे। हम सहज भाव से उधर ही खींचे

जायेगें। जो बारम्बार हम सुनते रहेगें। दो चार अच्छे या बुरे शब्द हमारे जीवन को बनाने या बिगाड़ने में पर्याप्त हैं।

इस विषय पर एक कथा— रोहिणेय चोर। राजगृही नगरी में आतंक मचा रखा था। बहुत उपाय करने के बाद भी राजा श्रेणिक चोर को पकड़ने में असफल रहे। अन्त में चोर पकड़ने का कार्य महामंत्री अभय कुमार को सौंपा गया। महामंत्री बुद्धि का निधान थे। उनके लिए कोई भी कार्य असफल नहीं था। चोर को पकड़ने के लिए चारों ओर जंगल पुलिस से घेरा गया। संयोग से उस समय परम तारक प्रभु महावीर राजगृही नगरी में पधारे हुए थे। धर्म देशना चल रही थी। तीर्थंकर की वाणी एक योजन तक सुनाई दे रही थी। चोर रोहिणेय के कान में प्रभु की आवाज पड़ी। उन्हें समझने में देर नहीं हुआ कि यह महावीर की आवाज है, और साथ-साथ मरते समय अपने पिता की अन्तिम सूचना भी याद आ गयी। मरते समय उसके पिता ने कहा थे— बेटा! महावीर को कभी न सुनना क्यों कि महावीर चोरी करना पाप मानते है। वे इतने प्रभावशाली है कि अगर एकबार तुम उन्हें सुन लो तो चोरी करना छोड़ दोगें और हमारी परम्परागत रोजी-रोटी नष्ट हो जायेगी। पिता की बात याद आते ही चोर ने अपने दोनों कान में अंगुली डालकर शब्द न सुनने का प्रयत्न किया।

क्रमशः

श्रीचन्द्रराजचरित्र

पुण्यवान पुरुष सदा निस्पृही होते हैं। संसार में निस्पृही-पुरुषों के पग-पग में निधान हुआ करते हैं। पत्थर में हाथ डाला जाता है, तो चिंतामणि रत्न की प्राप्ति होती है। इसी से ज्ञानी लोग सदा फरमाते हैं कि हेभव्यात्मओं! स्वार्थ का त्याग करके निस्वार्थ वृत्ति से धर्माचरण करते रहो। जिससे भविष्य का निर्वाण बड़े सुन्दर ढंग से होगा।

कहतें है आढ़े हाथ देने से, भोजन में घी ज्यादा पड़ता है-इसी प्रकार श्रीचन्द्र कुमार ने राजा दीपचन्द्र देव की पद्मिनी कन्या चन्द्रकला से ब्याह के लिये की हुई प्रार्थना को थोड़ा-सा किन्तु-परन्तु करके अपने लिये अधिक गौरव का स्थान प्राप्त कर लिया।

राजा रानी की और परिवार वर्ग की अनुमति से और श्रीचन्द्रकुमार की स्वीकृति से राजकन्या चन्द्रकलाने बड़ी प्रसन्नता से आगे बढ़कर सुन्दर सुगंधी फूलों की वरमाला कुमार के गले में पहना दी। लज्जावनत होती हुई तिरछी नजर से कुमार की अलौकिक रूप-माधुरी को अनिमेष भाव से निहार कर मन ही मन में जन्म को सफल समझने लगी।

उस समय कुमार मनमें कुछ सोच समझ कर वहां से उठ खड़ा हुआ और शौचादि का बहांना बनाकर सारथी समेत अट्टालिका से नीचे उतर आया। गुणचन्द्र ने रानियों से कह दिया कि अगर कुमार रथ में बैठ गया तो फिर गया समझियें हाथ नहीं आने का है। इस बात को जानकर वामांग कुमार और चतुरा आदि सखियां कुमार को घेर कर प्रेम-पूर्वक महल में वापस लिवा लाये।

कुमार ने एक पान का बीड़ा देकर चतुरा से कहा कि अपनी मलकनी को देकर इसके गुणों का वर्णन कराओ-तब कोकिलकण्ठी राजकुमारी ने अपने प्रिय के पहिले प्रसाद को पाकर प्रसन्नता से कहना शुरु किया—

ताम्बूलं कटु तिक्त मुष्ण-मधुरं क्षारं कषायान्वित,
वातघ्नं कफनाशनं कृमिहरं दुर्गन्ध-निर्नीशनम्।

वक्त्रस्याभरणं विशुद्धि करणं कामाग्नि संदीपनं,
स्वामिन्नेभि रिदं त्रयोदश गुणै र्युक्तं प्रसादीकृतम्।।

स्वामिन्! पान कड़वा-तीखा-गरम-मीठा-खारा कसैला-बादी नाशक-कफ-नाशक, कीटाणु-नाशक, दुर्गन्ध हरने वाला-मुख का अलंकार विशुद्धि करने वाला कामाग्निको चेतानेवाला इन तेरह गुणों से युक्त होता है। इसका आपने ठीक ही प्रसाद दिया है।

कुमार ने कहा यह बाह्य पान के गुण हुए आभ्यंतर पान कैसा होता है?–तब कुमारी कहती है–

सन्नाग-पत्राणि मिथः प्रियं वचः
सुप्रेम-पूगानि सुदृष्टि-चूर्णकं।
संतोष कर्पूर सुगन्ध वर्तिका–
तवेदृशं बीटकमस्तु मे विभो!।

हे नाथ! जो परस्पर में प्रेम वचन हैं वे ही नागरवेल के पान हैं सुन्दर प्रेम ही जिसमें सुपारी है। सद्विवेक-दृष्टि ही जिसमें मसाला है। संतोष ही जिसमें कपूर है। आपके द्वारा इस प्रकार का पान बीड़ा मुझे मिला।

कुमारी से चतुरा द्वारा पूछे जाने पर कुमार ने कहा–

सत्यं वचो–नागर–खण्ड–वीटकं
सम्यक्त्व–पूगं शुभ–तत्त्व–चूर्णकं।
स्वाध्याय-कर्पूर–सुगन्ध–पूरितं
तदस्तु मुख्यं शिव–सौख्य कारकम्।।

देवी चतुरे! मेरे ख्याल में सत्य वचन ही नागर पान का बीड़ा है। सचाई की उसमें सुपारी है, शुभ तत्व चिंतन का उसमें स्वादिष्ट मसाला है, और जो स्वाध्याय और कर्पूर से सुवासित है वही मुख्य रूप से शिवसुख करने वाला अन्तरंग पान बीड़ा है।

इस प्रकार काव्य-गोष्ठी चलती ही थी उसमें वामांग कुमार और चतुराने चन्द्रकला से कहा आप "श्रीचन्द्र" इस नाम का वर्णन कीजिये-कुमारी ने उन लोगों के आग्रह से कहा–

लक्ष्मी–केलिसरोऽट्टहासनिचयः काष्टावधू–दर्पणः
श्यामावल्लिसुमं स्व-सिन्धु-कुमुदं व्योमाब्धिफेनोद्गमः।

तारागोकुल-शुक्ल-गौरति-गृहं छत्रं स्मर-क्ष्मापते-
श्चन्दः श्रीसकलश्चिरं विजयतां ज्योत्स्ना सुधा-वापिका।।

लक्ष्मी का क्रीड़ा सरोवर, हास्य का समूह, दिशा रूपी स्त्री के लिये मुख देखने का दर्पण रात्रि रूप लता का पुष्प गगनसिन्धु का कुमुद, आकाश रूप समुद्र का झाग, तारा रूपी गोशाला की कामधेनु सफेद गाय, रति का घर कामदेव रूपी राजा का सफेद छत्र, और चांदनी रूप अमृत भरी वावड़ी के जैसे श्री शोभावाली चन्द्रकला से संपन्न श्रीचन्द्र देव जयवंते रहो।

इसके बाद सब सखियों ने कुमार से भी कहा -हे कुमार! कृपा कर आप भी "चन्द्रकला" इस नामका अर्थान्तर से दर्शन कीजिये-बारंबार कहने पर श्रीचन्द्र ने कहा-

ॐ कारो-मदन द्विजस्य गगन-कौडेक-दंष्ट्रांकुर
स्तारा मौक्तिक शुक्ति रन्धतमसः स्तम्बेरमस्याङ्कुशः।
श्रृंगारार्गल-कुंचिका विरहिणी मानच्छिदे कर्त्तरी,
सन्ध्या-वार-वधू नखक्षतिरियं चान्द्रीकला राजते।।

संसार में चन्द्रमा की कला क्या है? तो कहते हैं- कामदेव रूप ब्राह्मण का ओंकार। आकाश रूप सूअर की दाड़ का अंकुर। तारा रूप मोतियों की सीप। अंधेरा रूप हाथी का अंकूश। श्रृंगार रूप ताले की चाबी। विरहिणी के मान को काटने की कैंची। सन्ध्या रूपी वेश्या के शरीर में जार पुरुष का किया हुआ नख-क्षत। इस प्रकार यह चन्द्रकला चमक रही है।

इस प्रकार हास-परिहास के बीच होती हुई काव्य-गोष्ठी को सुनकर सब लोग दंग रह गये। परस्पर लोग कहने लगे-विधाता ने बड़ी सुन्दर जोड़ी मिलाई है। इन लोगों के दिव्य-दर्शन में साथ देने के लिये ही मानों सूर्य देव का भी आकाश में आना हुआ है। इस प्रकार प्रातःकाल होने पर हमेशा के नियमानुसार सबकी आज्ञा से श्रीचन्द्रकुमार सामायिक-प्रतिक्रमण-देव-पूजा आदि कृत्यों में लग गया।

राजा रानी राजकुमार-राजकुमारी सभी वरदत्त सेठ से सत्कारित सम्मानित होते हुए अपने राजमहल में आये। प्रातः कृत्यों से निवृत्त हो राजा ने ज्योतिषी से विवाह लग्न पूछा। पण्डित ने कहा देव! कल वैशाख-शुक्ला पंचमी का दिन वैवाहिक कार्य के लिय सब रेखाओं से शुद्ध और शुभ है।

राजा दीपचन्द्र-देव ने कन्या के पिता राजा सुभगांग से कहा कि इस समीपवर्ती लग्न में कुशस्थलेश्वर महाराजाधिराज प्रतापसिंहजी कैसे आ सकेगें? इस काम में उनकी उपस्थिति अत्यधिक वांछनीय है। इस पर ज्योतिषी ने कहा महाराज! यदि आप सबका भला चाहते है तो ननु नच किये बिना कल के मुहूर्त्त में शुभस्थ शीघ्र —के न्याय से विवाह कर दीजिये। ऐसी नैमित्तिक की सलाह से विवाह की तैयारियाँ होने लगी।

रानी प्रदीपवती ने विचार किया यह मेरी पुत्री सूर्यवती के कुशस्थल पुर नगर निवासी सेठ का पुत्र है। इसलिये यह उसी का पुत्र है ऐसा मानकर उसने श्री चन्द्र की ओर रहकर वर पक्ष की तरफ से विवाह के नेकचार करवाये और सप्तखण्डी महल में विवाह की सारी सामग्री तैयार करवा दी।

श्रीचन्द्र के पास विवाह के उपयुक्त कुछ नहीं था। वस्त्राभूषणों से लेकर सारी आवश्यक वस्तुओं का प्रबंध रानी प्रदीपवती ने ही किया। कुल स्त्रियां मंगल गीत गाने लगीं। मनोहर बाजे बजने लगे। मनोरंजन के लिये नाच-गान आदि कराये गये। कुमार हाथी पर सवार हो राजकीय सेना और लवाजमें के साथ धूमधाम से विवाह मण्डप के द्वार पर पहुँचे।

कुलाचार के अनुसार विवाह के सारे रीति-रिवाज पूर्ण किये गये। मातृका-मण्डल के पास बैठाकर मंगलगीत गाये जाने लगे। बाजे बजने लगे। पुण्याह पुण्याह का पाठ होने लगा। शांतिपाठ किया गया बन्दीजन स्तुति पाठ करने लगे। लग्नांश की उदय-बेला में ज्योतिषी ने वर-वधू का पाणिग्रहण करा दिया। बाद में सुहाग और पारस्परिक प्रेम को स्थिर बनाये रखने का उपदेश रूप में दोनों को ध्रुव दर्शन कराया। इस प्रकार वहां श्रीचन्द्रकुमार की विवाह विधि विस्तार पूर्वक बड़े आनन्द से ठाठ-बाट के साथ सम्पन्न हुई।

राजा दीपचन्द्र देव ने भी विवाह-महोत्सव में अपनी ओर से कोई कोर कसर बाकी न रखी। करमोचनावसर में हाथी घोड़े सोना चांदी मणि रत्न आदि सभी गृहस्थ सम्बन्धी राज योग्य आवश्यकीय वस्तुएं दहेज में प्रदान की। कुमारी की माता रानी चन्द्रवती ने सिंहपुर से लाई हुई सारी सामग्री को बड़े आदर और स्नेह के साथ दहेज में दे दी। चतुरा कोविदा-प्रियंवदा आदि नामवाली बहत्तर दासियां मय वस्त्राभूषणों के दी गई।

राजा दीपचन्द्र ने कहा "कुमार! इतने दिन कन्या पीहर में स्वेच्छा पूर्वक रही। कभी इसके मनको कोई बाधा नहीं पहुँचाई गई। अब आज से यह

आपकी अर्धांगिनी बनी है। आप इसके हानि लाभ के कर्त्ताधर्ता हैं। हम आप जैसे योग्य जमाई को पाकर निश्चित होते हैं।" इस प्रकार कुछ कह सुनकर एक दूसरे अपने कर्तव्य भार से मुक्त हुए।

दूसरे दिन प्रातःकाल कुमार श्रीचंद्र अपनी नवोढ़ा पत्नी चन्द्रकला के साथ राजकीय चिन्हों को धारण करके हाथी पर सवार हो बड़ी सज-धज से शहर के प्रमुख राजमार्गों से होकर सवारी के तौर पर मय–दहेज सामग्री की सजावट के साथ निकले।

मार्ग में स्थान-स्थान पर नाच गान होते जाते थे। गगनभेदी तोपों की गड़गड़ाहट के बीच जोरों की जयध्वनियां हो रही थी। चन्द्रकला अपने भाग्य पर इठलाती हुई मन ही मन प्रसन्न होकर अपने को धन्य समझ रही थी। कुमार स्थान-स्थान पर दान देता हुआ अपने विवाह की खुशी में सजाये हुए नगर की शोभा को देखता जाता था। क्रमशः सवारी निश्चित उतारे पर जा पहुँची। वहां विवाह की बाकी रही सारी विधि सम्पन्न की गयी। अपनी तरफ से कुमार ने सारे नगर–निवासियों को भोजन कराया। इस प्रकार चारों ओर खुशी का साम्राज्य छा गया।

इधर तिलकपुर से आये हुए धीरमंत्री ने विश्वस्त सूत्रों से निश्चय करके भारी प्रसन्नता से श्रीचन्द्रकुमार के पास आकर प्रार्थना की कि हे कुमार! तिलकपुर में राधावेध की साधना करके आप चुपचाप चले आये तबसे वहां आपके विवाह की प्रतीक्षा की जा रही है। कृपाकर अब आप को वहां चलना चाहिये।

कुमार ने उत्तर दिया—मंत्रीजी? आपके इस आमंत्रण का मैं आदर करता हूँ। परन्तु इस विषय में मेरे पिता ही प्रमाण हैं। इसका जबाव मैं नहीं दे सकता हूँ। आपको इस संबंध में उन्हीं से बातचीत करनी चाहिये।

कुमार की इस बात से धीर मंत्री बड़े प्रसन्न हुए। कुमार से अति सम्मान और सत्कार को पाकर वे कुश स्थल में कुमार के पिता सेठ लक्ष्मीदत्तजी से मिलने के लिय कुमार की आज्ञा लेकर चल दिये।

कुमार ने भी राजा दीपचन्द्र देव से अपने नगर की ओर जाने की आज्ञा मांगी। बड़ी मुश्किल से राजा को आज्ञा देनी पड़ी। आखिरकार कुमार राजा की दी हुई सारी दहेज-सामग्री को लेकर रवाना हुआ। केवल हाथियों को उसने वहीं–दीप शिखा में ही रखा।

राजा, रानियों, राजवर्गी, और राज–परिवर के लोग मय-नगर-निवासियों के–कुमार को पहुँचाने के लिये नगर से कुछ दूरतक गये। कुमार ने उन सबको प्रथम विश्राम पर ठहरा कर, अलग-अलग नमस्कार करके, उन सब से विदा मांगी। कुमार के प्रेम और भक्ति से प्रसन्न हुए उन सबने तरह-तरह के आशीर्वाद दिये। अपनी ओर से उचित शिष्टाचार करके मन में हर्ष और विषाद लिये जल्दी दर्शन दीजियेगा कहते हुए दीपशिखा के नागरिक अपने नगर की ओर लौट गये।

रानी पदीपवती और माता चन्द्रवती ने भी कुलोचित शिक्षा देते हुए कहा—

अभ्युत्नथामुपाखे गुरुपतौ तग्द्राषणे नम्रता,
तत्पादार्पित दृष्टि रासन–विधिविधिस्तस्योपचर्यस्वयम्
सुप्ते तत्र शयीत तत्प्रथमतो मुञ्चेच्च शय्यामपि,
प्रोच्चैः पुत्रि! निवेदिताः कुल वधु-सिद्धान्त-धर्मा अभी।।

बेटी! गुरुजनों और पति के आने पर अपने आसन से उठ कर उनका स्वागत करना। उनके साथ संभाषण में नम्रता रखना। अपनी लज्जालु दृष्टि को उनके चरणों की ओर झुकाये रखना। आने पर उन्हें आसन देना। अधिक क्या? उनको खिलाकर खाना, सुलाकर सोना, जगने से पहिले जगना, यही धर्म कुलीन स्त्रियों के लिये शास्त्रों में बताये गये हैं।

इस प्रकार चन्द्रकला को उनकी सखियों को दास-दासियों को सबको यथायोग्य शिक्षा देकर आंखों में हर्ष और विषाद के आँसूभर, आशीर्वाद देती हुई दोनों राजा दीपचन्द्र देव के साथ लौट आई। वरदत्त सेठ ने भी कुमार की आज्ञा से अपने घर की राह ली। उपस्थिति याचकों को वस्त्र-आभूषण घोड़े आदिकों के दान से संतुष्ट करके कुमार ने विदा किया।

सब के चले जाने पर कुमार ने अपने कुटुम्बियों के प्रथम वियोग से व्यथित चन्द्रकला को समझा बुझाकर शान्तकिया। धीर मंत्री की सेना सहित धीरे-धीरे चलने वाली अपनी सेना को पीछे छोड़ दिया। देखरेख के लिये अपने प्यारे मित्र गुणचन्द्र को नियुक्त कर दिया। खुद सारथी समेत बड़े वेग से रथ द्वारा रास्ता तय करके उसी रात्री में कुशस्थलपुर के बाहर के अपने श्रीपुर

स्टेट में आ पहुँचाया। रथ वहीं छोड़ उसी समय घर गया और कुटुम्बियों से जा मिला।

कुमार को आया देखकर माता पिता बड़े प्रसन्न हुए पूछने लगे कि- बेटा! पाँच दिन तक तुम कहां रहे?। किसी ने बलात् रोके रखा था? या अपनी इच्छा से कहीं रुके थे?

कुमार ने कहा पिताजी ! दीपशिखा के वरदत्ता सेठ अचानक मिल गये थे। उनके आग्रह से उनके घर पर मुझे वहां होने वाले समारोह में सम्मिलित होना पड़ा बड़ी मुश्किल से आज उन से विदा होकर आया हूँ।

पिताने कहा बेटा! तुम्हारे उदार चरित्र और उज्जवल गुणों से हम ही नहीं महाराज प्रताप सिंह भी बड़े प्रसन्न हैं। प्रसन्नता को सार्थक करने के लिये उन्होंने तुम्हारें लिये रत्नपुर नाम का एक बड़ा नगर प्रदान किया है। अब अपनी ओर से कृतज्ञता प्रकट करने के लिये एक दिन उनसे अवश्य मिलों।

कुमार ने कहा पिताजी! आपकी आज्ञा से गुणियों का समादर करने वाले महाराज की सेवा में उपस्थित होकर अवश्य मैं अपना कर्त्तव्य पालन करूंगा। इस प्रकार कहते हुए कुमार के शरीर पर माता की नजर पड़ी। हाथ में बँधे कंगनदोरडे को देखकर उसने पति से कहा, देखियें कुमार तो कहीं बनडा बनकर आया है। आश्चर्य चकित हुए सेठ ने कुमार से कहा बेटा! बताओं तो सही कि क्या बात है? कुमार ने कहा किसी पण्डित का दिया हुआ अप्राप्य वस्तु को प्राप्त कराने वाला यह महाप्रभावशाली कंगन दोरड़ा है। सेठ ने कहा-कहीं कोई विवाह करके आये दीखते हो? क्यों ठीक है न? इस पर कुमार चुप हो गया।

सेठ सेठानी खुश होते हुए कहते हैं "बाबा नन्द के फंद गोविंद जानें।" कुमार की लीला का कोई आर पार नहीं है। इस प्रकार सभी प्रसन्नता पूर्वक समय बिताने लगे।

बडा बडाई ना करे, बड़ा न बोले बोल।
हीरा मुख से ना कहे, लाख हमारा मोल।।

महापुरुषों की महत्ता इसी में है कि वे अपनी बड़ाई-प्रशंसा खुद नहीं किया करते। बड़े आदमी न बोलते हुए ही पूजा के स्थान बन जाते हैं। हीरा मुंह से कब बोलता है-कि हमारी कीमत लाख रुपये की है? हीरा तो नहीं

बोलता, पर जौहरी उसे मुकटमणि बना ही देते हैं। ठीक इसी प्रकार महापुरुषों की महिमा को उनके न बोलने पर भी गुणी आदमी गाते ही रहते हैं।

कुशस्थलपुर में एक दिन श्रीचन्द्रकुमार अपने महल की छत पर खड़े हुए बाजार का दृश्य देख रहे थे। उनके पिता घर में किसी गृहस्थ सम्बन्धी कार्य में लगे हुए थे। इतने में बढ़िया बाजों की आवाज उनको सुनाई दी। बाजे इतने जार से बज रहे थि कि उनकी आवाज सारे शहर में भर गई थी। लोगों के झुंड देखने के लिये इकट्ठे हो रहे थे। चारों ओर से याचकों और पुरवासियों के मुंह से प्रशंसात्मक वचन निकल रहे थे। कोई राजकन्या अपने राजकीय चिन्हों के साथ वधु वेश में सवारी के साथ पालकी में विराजमान थी। उसे देखकर लोग कहने लगे यह कौन है? ये कहां जायेंगी?। सवारी के प्रबंधक रूप में श्रीचन्द्रकुमार का दोस्त गुणचन्द्र कुमार भी साथ चल रहा था। उन्हें लोग पूछना चाहते थे-इतने में वह सवारी लक्ष्मीदत्त सेठ के विशाल भवन के सामने आकर रुक गई।

सेठ बाजों की आवाज से कुतूहल प्रेरित हो – क्या बात है? कहते हुए हड़बड़ा कर घर से बाहर निकले। अपने घर को ही लक्ष्य बनाये हुए सैनिकों को देखकर सेठ कुछ डर से गये। सेठ की उस स्थिति को जानता हुआ गुणचन्द्र पास में आकर नमस्कार पूर्वक कहने लगा।

पिताजी! सिंहपुर के राजा सुभगांग की राजकुमारी राजा दीपचन्द्र देवकी दौहिती चन्द्रकला नाम की यह आपकी पुत्रवधू है। अभी थोड़े दिन पहिले ही तो कुमार श्रीचन्द्र ने दीपशिखा में इस कन्या का पाणिग्रहण किया था। क्या आपको पता नहीं हैं?

सेठ सेठानी आश्चर्य चकित हुए विस्फारित नेत्रों से अपनी पुत्रवधू को देख रहे थे कि–चन्द्रकला बड़े ही आदर से सास–ससुर के पैरों पड़ी। चिरंजीवी हो, पुत्रवती हो, सौभाग्यवती हो इत्यादि बहुत बहुत आशीर्वाद दिये। आरती–और मंगलाचार करके पुत्रवधू को घर में प्रवेश कराया। दहेज की सामग्री यथास्थान रख दी गई। कन्यापक्ष के आदमियों को यथोचित उतारे दे दिये गये। बधाइयां बांटी गई।

अपने अपने स्थान में सबके चले जाने पर सेठ ने कहा बेटा! ब्याह करके आये और उसकी चर्चा भी नहीं की? हमारे मनकी उमंग तो मनमें ही

रही। अरे! पता लगता तो नगर प्रवेश का ठाठ तो मैं करता ही। अस्तु, जो हुआ सो अच्छा ही हुआ। ऐसा कह सेठने चन्द्रकला के लिये और उसके साथ की दासियों के लिये रहने योग्य एक सुन्दर महल दे दिया। कुमार ने भी बड़ी उदारता से अपनी मधुर-वाणी से चन्द्रकला का स्वागत किया।

सेठ लक्ष्मीदत्त ने पुत्र-विवाह के उपलक्ष्य में बड़े-बड़े सेठ साहूकार कौटुम्बिक-स्नेही-नागरिक सभी लोगों को कई दिन तक जीमाये। कोकिल कंठी सुहागिन-स्त्रियों ने मंगल गीत गाये। खूब नाच गान हुए। तरह तरह के आमोद प्रमोद हुए। याचकों को संतुष्ट किया गया।

दहेज की सामग्री को देखकर लोग बहुत संतुष्ट हुए। कोई श्रीचन्द्र के गुण और रूप की प्रशंसा करने लगे तो कोई उसके रथ की बड़ाई करने लगे। किसी ने पद्मिनी के रूप की महिमा गाई तो किसी ने सेठ सेठानी का पुण्य सराहा। किसी ने दीपशिखा को धन्य कहा तो किसी ने कुशस्थलपुर को धन्यवाद दिया। उत्सव बड़े ठाठ से मनाया जा रहा था।

इसी बीच में जय आदि राजकुमारें ने डाह से जलते हुए कुमार को संकट में डाल ने की बात सोची। उन्हें पता कि तिलकपुर से धीर मंत्री के साथ वीणारव नाम का गवैया आया हुआ है। उन्होंने उसे अपने पास बुलाया और कहा कि यदि श्रीचन्द्र प्रसन्न होकर कुछ मांगने के लिये कहे तो उसके रथ का घोड़ा मांग लेना। इस के बदले में हम तुमको भारी इनाम देंगे। लालच बुरी बला होती है। उसी से प्रेरित हो वीणारव ने भी मंजूर करलिया। जैसी होनी होती है वैसी ही बुद्धि भी हो जाती है।

वीणारव ने सेठ के मण्डप में जाकर बड़ी सजावट से राधावेध का वर्णन किया। जिसमें राजाओं का और राजकुमारों का आना, उनका नाम-ठाठ-वंश वर्णन होना, राधावेध के लिये बारी बारी से उनका उठना, असफल होना, गिरना पड़ना, कांपना, लज्जित होना, लोगों द्वारा तिरस्सार होना, उस समय श्रीचन्द्र का अचानक आना, राधावेध को सिद्ध करना, रथ पर चढ़कर निस्पृहता से चले आना, कन्या का विलाप, राजाओं की विदायगी, कुमार को लाने के लिये धीर मंत्री का आना इत्यादि बड़े रोचक ढंग से बयान किया। खुश हुए सेठ ने और दूसरे लोगों ने उसे बहुमूल्य चीजें धन इनाम में दिया।

श्रीचन्द्रकुमार ने उससे कहा जो इच्छा हो सो मांग लो-तब वीणारव ने "आपके सुवेग रथ के घोड़ों की जोड़ी में से एक घोड़ा दीजियें" मांगा।

कुमार ने कहा अरे! मांगकर भी तूने क्या मांगा? कोई दारिद्र या नाशक वस्तु तो मांगनी थी। खैर, अपने मित्र गुणचन्द्र को भेजकर सुवेगरथ मंगाया और वीणारव से कहा गायक! एक घोड़े से तुम्हारा काम नहीं बनेगा। लो यह रथ और यह घोड़े से तुम्हारा काम नहीं बनेगा। लो यह रथ और यह घोड़ों की जोड़ी। और भी धन माल उसे इनाम में दिया। चारों ओर से वाह! वाह!! की जयध्वनि होने लगी।

वीणारव गायक ने श्रीचन्द्र की तारीफ में कई अद्‌भुत श्लोक पढ़े।

आस्ये पद्‌मधिया गभीरहृदये वारांनिधेः शंकया
नाभौ पद्‌मनदभ्रमात्क्रम-कर-द्वन्द्वेऽणाब्जेहया।
फुल्लेन्दीवर-वाच्छया नयनयो र्दन्तेषुवज्राकर-
भ्रान्त्या कल्पतरुभ्रमेण वपुषि श्रीचन्द्र! ते श्रीरभूत् ।।

अर्थात् हे श्रीचन्द्र! आपके मुख को कमल मानकर, गंभीर हृदय में समुद्र की शंका से, नाभि में पद्महद की भ्रांति से, चरणों में और हाथों में लाल कमल की भावना से, नयनों में नील कमल की चाहना से , दातों से वज्राकर की भ्रान्ति से, और शरीर में कल्पवृक्ष के भ्रम से लक्ष्मी रह रही है।

क्षारो वारिनिधिः कलंक-कलुषश्चन्द्रो रविस्तीव्ररुक्,
जीमूत श्चपलाश्रयोऽर्थि-पटलादृश्यः सुवर्णाचलः
काष्टं कल्पतरु र्दषत्सुरमणिः स्वर्धामधेनुः पशुः
श्रीचन्द्रास्ति सुधा द्विजिव्हविधुरा तत्केन साम्यं तव।।

अर्थात्-हे श्रीचन्द्र! अगर तुम्हारी समता समुद्र से करें तो वह खरा है। चन्द्रमा से करे तो वह कलंकी है। सूर्य से करें तो वह असह्य ताप वाला है। बादल से करें तो वह जलाने वाली चपल बिजली का आश्रय है। मेरु से करें तो वह याचकों के अगोचर है। कल्पवृक्ष से करें तो वह काष्ठरूप है। चिन्तामणि से करें ते वह पत्थर मात्र है। कामधेनु से करें तो वह केवल पशु ही है, और अगर अमृत से करें तो वह शेषनाग आदि सांपों से घिरा हुआ है अतः हे कुमार आप उपमा के अभाव में अनुपम हैं।

उस समय वहां दूसरे भी कई कवि उपस्थित थे। उन्होंने भी श्रीचन्द्र की प्रशंसा में बड़े सुन्दर सुन्दर श्लोकों की रचना सुनाई। कुमार ने उनका भी यथायोग्य धन और वस्त्राभूषणों से सत्कार सन्मान किया। इस प्रकार अन्यान्य भाट चारण आदि याचकों को कुमार ने इच्छा से अधिक दान देकर सन्तुष्ट करके विदा किया।

वहां उस समय उस उत्सव में आये सभी लोग कुमार द्वारा सन्मानित और सत्कृत होकर कुमार की उदारता से चकित हो चारों ओर कुमार के गुणों की और भाग्य की प्रशंसा करने लगे। लोग कहने लगे राजा और राजकुमार भी क्या दे सकते हैं जितना कि इस श्रेष्ठि–कुमार ने दान दिया है। इस प्रकार सुन्दर वस्त्रालंकारों से सुसज्जित स्त्री-पुरुष प्रसन्न हो अपने अपने उतारे पर गये।

रथ के हाथ से निकल जाने पर सेठ लक्ष्मीदत्त को बेहद दुःख हुआ। साथियों ने भी नमक मिर्च लगाकर सेठ को उत्तेजित किया। सेठ ने कुमार से एकान्त में कहा—ओ मेरे प्यारे बेटे! तुमने जो कुछ दानादि कार्य किये, ठीक किये। पर पिता होने के नाते कुछ कहना चाहता हूं। बेटा! अपन बनिये हैं। राजाओं से आगे बढ़कर दान नहीं करना चाहिये। तुम स्वयं भी जानते ही हो, धीर मंत्री से भी तुमने सुना ही है, कि वे जयकुमार आदि राजकुमार तुमसे द्वेष रखते हैं। वे छिद्र देखते हैं। मौका पाते ही तुम्हें हानि पहुँचाना चाहते हैं। अगर सावधानी न रही तो वे प्राण लेने से भी नहीं चूकेंगे। बेटा! तनिक तो सोचो, जिन घोड़ों की कृपा से तुमने इतनी पृथ्वी देखी और बड़े बड़े असम्भव कार्य भी किये हैं, उन घोड़ों को बिना सोचे समझे यों ही किसी को क्या दान कर देना चाहिये था? पुत्र ! कहना मानो, घोड़ों समेत रथ का मूल्य देकर वापस लेलो।

अपने पिता के वचनों का उत्तर देते हुए श्रीचन्द्र ने कहा–पिताजी! मनुष्य को कभी अपने आपको किसी से भी हीन नहीं समझना चाहिये। मैं बक्काल बनिया नहीं बनना चाहता हूं। पहले शाह फिर बादशाह की कहावत को मैं चरितार्थ करना चाहता हूं। माना कि वे राजकुमार मेरे से द्वेष करते हैं, पर मनुष्य को हमेशा तदवीर करते हुए भी अपने तकदीर पर भरोसा रखना चाहिये। किसी की भी ताकत नहीं, जो साधी राह पर चलते हुए हमारा कोई

बाल बांका कर सके। पिताजी! आपकी अंतिम बात रथ को वापस लेने के लिये है क्षमा कीजियें। आपकी आज्ञा का पालना करना मेरा कर्त्तव्य होते हुए भी मैं पालन नहीं कर सकूँगा। क्योंकि दान को वापस लेना – मैंने कहीं पढ़ा नहीं कभी सीखा भी नहीं। भाग्य से मिली वस्तुएं फिर भी भाग्य से ही आ मिलेंगी। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं।

पुत्र के प्रत्युत्तर को पाकर सेठ हतप्रभ होकर चूमता हुआ बोला- वत्स! छोटे मुँह बड़ी बात नहीं करनी चाहिये! ये घोड़े, ऐसा रथ अन्यत्र अप्राप्य है। इनका दान मुझे ठीक नहीं मालूम देता। अतः इनका दान मुझे ठीक नहीं मालूम देता। अतः इनका मूल्य देकर ले लेना ही ठीक होगा।

पिता की बात सुनकर कुमार चुप हो गया, और अपने महल में चला गया। एकान्त में सोचने लगा–अहो परतन्त्रता में कितना दुःख है। इसी पराधीनता से आदमी किं कर्तुव्य मूढ होकर कर्तव्य से भ्रष्ट हो जाता है। अतः अब मुझे यहां नहीं रहना चाहिये। अगर मैं यहां रहूँगा तो स्वाधीनता से मुझे घूमने-फिरने, लेने-देने और प्रत्येक काम में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। अब मेरा यहां क्षणभर के लिये भी ठहरना अनुचित है। मैं तो साहसी हूँ। साहस से क्या सिद्ध नहीं होता? कहा भी है—

को विदेशः सुविद्यानां, किं दूरं व्यवसायिनाम्।
कोऽतिभारः समर्थानां, कःपरः प्रिय-वादिनाम्।।

अर्थात्-विद्वानों को कोई विदेश नहीं, व्यवसाय कर ने वालों के लिये कोई स्थान दूर नहीं, समर्थ पुरुषों के लिये कोई भार, भार नहीं और प्रिय बोलने वालों के लिये कोई पराया नहीं हुआ करता है।

साहस के साथ की हुई विदेश यात्रा से अनेकों लाभ होते हैं कहा भी है—

दीसइ विविहच्छरियं, जाणिज्जई सुयणादुज्जणविसेसे।
अप्पाणं च कलिज्जइ, हिंडिज्जई तेण पुहवीए।।

अर्थात् - अनेक प्रकार के आश्चर्य देखने को मिलते हैं। सज्जन दुर्जनों की विशेषतायें भी जानने को मिलती है। अधिक क्या? आदमी को अपनी ताकत का भी अंदाज लग जाता है। इसीलिये पृथ्वी में विदेश यात्रा के लिये चलना चाहिये।

कुमार सोचते है आज रात को ही चुपके से मुझे यहां चल देना चाहिये। मुझे थोड़ा बहुत विचार-नवपरिणीता चन्द्रकला का है। यह मेरे बिना जल हीन मीन की तरह छटपटाती हुई प्राणों को कैसे धारण कर सकेगी। इसने मेरे लिए अपने माता-पिता को और राज्य-सुखों को छोड़ कर, दर्शनमात्र से ही मुझे अपना लिया है। यह मुझ अत्यन्त अनुरागवाली है। इसने मेरे लिये राज-कुल रीत-रिवाजों एवं नियमों का परित्याग करके बणिक-कुल के रीति-रिवाजों एवं नियमों को बिना किसी हिचकिचाहट के अपनाये हैं। इस हालत में इस प्यार की प्रतिमा को धोबी का कुत्ता घर का न घाट का जैसी हालत में छोड़ जाना भी क्या ठीक होगा? अगर मैं ऐसा करता हूं तो संसार में इससे बढ़कर दूसरा क्या अन्याय, और विश्वासघात हो सकता है?। दुनिया मेरे ऐसे कर्त्तव्यों पर थूकेगी, और मुझे घृणा की दृष्टि से देखेगी।

तो क्या मैं ऐसा साहस न करूं? नहीं ऐसा कदापि नहीं हो सकता। मैंने अपने विचारों से पीछे हटना कभी सीखा ही नहीं। मैं उन पुरुषों में से नहीं हूं, जिसके मनोरथ अधूरे ही रहजाते हैं अतः मैं यहां से जाऊँगा तो जरूर उसमें कोई संदेह नहीं। मैं पुरुष हूँ, पुरुषार्थ मेरा धर्म है। अगर मेरे विचारों और स्वतंत्रता के मार्ग कोई रोड़े आयेंगे तो मैं उन सब को चीरता-फाड़ता फांदता-लांघता चला जाऊँगा। मैं अपने विचारों से तनिक भी टस से मस नहीं होऊंगा।

मुझे न तो किसी का भय है, और न किसी की चिन्ता है। यदि थोड़ी बहुत चिन्ता है तो चन्द्रकला की है। अतः इसे अपने दिल की बात कह कर के, ठीक ढंग से समझा बुझा कर, प्रसन्न करके ही जाऊंगा।

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।
मनोयोगतें होत है, नीच ऊंच परतीत।।

जीवन में मन–मजबूत आदमी ऊंचे उठते हैं। मन की विचार धारा ही हमारे आचारों को ठीक और बेठीक बनाती है। की हुई प्रतिज्ञा को निभाने में मन ही तो होता है। अगर मन शिथिल हो जाय, तो मानव महामानव नहीं बन सकता । शिथिल मन वाले की स्थिति घास-फूससे भी गई बीती होती है।

श्रीचन्द्रकुमार अपने मन की तरंगों का तोल जोख कर रहा था। मजबूती से अपने जीवन में मनोयोग के लगा रहा था। अपनी जीवन–संगिनी

चन्द्रकला को भी अपने मनो विचारों के अनुकूल बनने की वह सोच रहा था। ऐस प्रसंग में वहां उसका अभिन्न-मित्र गुणचन्द्र भी पहुँच जाता है। दोनों आपस में कोई बात छिपाते नहीं थे। जो बात श्रीचन्द्रकुमार को दूसरे आदमी नहीं कह सकते थे, वह बात गुणचन्द्र के द्वारा कुमार के पास पहुँच जाती थी।

आज भी ऐसी ही एक घटना को लेकर कुमार के पास गुणचन्द्र पहुँचा है। अपने विनीत–वचनों को बड़ी गंभीरता से वह कुमार के सामने रखता है-

माननीय कुमार! पिताजी के उस समय के वचनों को सुन कर गायक वीणारव ने मेरे द्वारा आपसे प्रार्थना करवाई है, कि मैंने जयकुमार आदि राजकुमारों की सिखावट से ही रथ और घोड़ों की मांगनी की थी। आप कृपा करके दान किया हुआ रथ मुझ से ले लें, और उसके बदले में यथायोग्य सुवर्ण प्रदान कर दें। आप को रथ दान का बड़ा भारी फल तो प्राप्त हो ही चुका है। गायक वीणारव उस रथ को और घोड़ों को वापस आपही को बेचना चाहता है। आप सारे संकोचों को छोड़ कर इस बात को मान लें। वह क़हता है, हमतो आपके याचक हैं, और रहेंगे। आपने जितना दान दिया है, उतना और कौन देगा? अतः आप कृपा करके एक्जाना देकर इस रथ को वापस ग्रहण कर लें।

यह सुन कुमार ने मित्र-गुणचन्द्र से कहा, मित्र! जाओ, उस गायक से कह दो, कि जो कुछ तुम को दिया गया है, वह तुम्हारा ही है। दिया हुआ दान कभी वापस नहीं लिया जाता। विचार शील पुरुषों के मुंह से निकले हुए वचन हाथी के दांतों की तरह वापस अन्दर नहीं जाते। जो कह दिया, सो कह दिया। वह तो अमिट रेख बन ही जाती है। इसके हजारों उदाहरण भारतीय इतिहास में भरे पड़े हैं—

सिंह गमन सुपुरुष-वचन-केल फले इकवार।
तिरिया-तेल हमीर-हट-वढे न दूजीवार।।

और भी—

सकृज्जल्पन्ति राजानः, सकृज्जल्पन्ति पण्डिताः।
सकृत्कन्याः प्रदीयन्ते, त्रीण्येतानि सकृत् सकृत।।

अर्थात्—राजाओं के वचन, उत्तम पण्डितों के वचन जो निकल गये वो निकलगये, बार-बार नहीं बदलते, और कन्या भी एक बार ही ब्याही जाती

है बार बार नहीं अतः उस बीणारव गायक से कह दो, कि अगर तुम्हारी और कुछ लेने की इच्छा हो तो मांग लो, और लेकर चले जाओ। रथ वापस नहीं लिया जा सकता।

कुमार की इस दृढ़ भावना को जानकर गुणचन्द्र ने वीणारव को वहां से विदा किया। वह वापस कुमार के पास आया। कुमार ने भावी वियोग की सूचना बड़े दुःखित हृदय से देते हुए कहा, मित्र गुणचन्द्र ! मेरे और पिताजी के विचारों में अंतर है। स्वभाव के न मिलने से हर बात में खींचातानी बनी रहती है। इस हेतु से मैं अपनी उन्नति और उत्कर्ष में बाधा पहुंचाने वाले पिता के पास नहीं रह सकता। अपना स्वाधीन जीवन बिताने की भावना से मैं यहां से अन्यत्र जाना चाहता हूँ।

एकाएक कुमार की बात को सुन घबड़ाया हुआ गुणचन्द्र कहने लगा- कुमार! क्या कहते हो? ऐसा करना ठीक नहीं होगा। आपको किस चीज का अभाव है? धन धान्य ऐश्वर् और सम्पत्ति सभी तो आपके पास मौजूद है। आप अपनी इच्छानुसार उपभोग कर सकते है। आप को ऐसे विचार मन में नहीं लाने चाहिये।

इस प्रकार मित्रों की बात हो ही रही थी कि धनंजय नाम का सारथी भागता, हांफता वहां आ पहुंचा, और कुमार से कहने लगा, स्वामिन! आपकी आज्ञा से वीणारव परिवार के साथ रथ पर बैठकर अपने घर की और रवाना होने लगा, तो वे दोनों उत्तम घोड़े हठात् उसे श्रीपुर की ओर ले गये। प्रयत्न करने पर भी वे उसके घर की ओर न चले।

कुमार घोड़ों की स्वामी भक्ति को समझ गया। वह कुछ घुड़सवारों को साथ लेकर श्रीपुर जा पहुंचा। अपने स्वामी को देखते ही घोड़े हिनहिना उठे। अपनी मूक वाणी में स्वामि के प्रति स्नेह सम्मान प्रदर्शिति करने लगे। कुमार की आंखे भी इस पशु-प्रेम से छल-छला गई।

बाद में कुमार ने घोड़ों की पीठपर बड़े प्यार से हाथ फेरते पुचकारते हुए कहा प्यारे बाज-बहादुरों! तुम्हारें गुण अवर्णनीय हैं। तुमने मुझे अपार सुख दिया है। मैं तुम्हें अपने से जुदा करना नहीं चाहता था, परन्तु क्या किया जाय, समय ही ऐसा उपस्थित हो गया, कि मुझे अपने वचन की रक्षा के लिये तुम्हें इस गायक के हाथ सौंपना पड़ा है। अतः अपने स्वामी की वचनरक्षा के लिये

इसके साथ तुम खुशी से जाओ। तुम बड़े स्वामीभक्त हो। अधिक क्या कहूं।

यह सुनते ही घोड़ों ने अपने स्वामी के प्रति कृतज्ञता जताते हुए वीणारव को लेकर उसके गम्य प्रदेश की ओर मुडे। वीणारव भी कुमार को आशीर्वाद देता हुआ अपने घर की ओर चला गया।

विदेश-गमन के अपने दृढ़-विचारों को कार्यान्वित करने के लिये कुमार ने मित्र-गुणचन्द्र को सभी अधिकारियों का स्वामी, और धनंजय को प्रधान सेनाधिपति बना दिया। इसी तरह नगर-रक्षक, दुर्गरक्षक, प्रासाद-रक्षक आदि-आदि पदों पर योग्य योग्य अधिकारियों की नियुक्ति करके अपने अपने कामों को सुचारु रूप से संचालित करने की आज्ञा दे दी। महाराज प्रतापसिंह से प्राप्त श्रीपुर नगर को कुमार ने दूसरी अमरावती बना दिया।

बाद में कुमार ने राजसी वेश-भूषा और राजसी ठाठ-बाठ के साथ राजा की तरह अपने भवन में प्रवेश किया इधर तिलक पुर की राजकुमारी के साथ कुमार के ब्याह का आमंत्रण लेकर आने वाले प्रधान श्रीधीर. मन्त्री गुणचन्द्र के साथ सेठ लक्ष्मीदत्त के पास पहुंचे और सेठ को कुमार के विवाह का निमन्त्रण दिया।

सेठ लक्ष्मीदत्त ने मंत्री से कहा–महोदय! आप दो दिन और प्रतीक्षा करें। एक दो दिन में कुमार श्रीचन्द्र महाराज से मिलने को जायेगा तब आप भी साथ चले जाना, और विवाह के लिये निवेदन कर देना। महाराजा की आज्ञा मिलते ही हम कुमार को तिलकपुर भेज देंगे। हमारी पुत्र-वधु चन्द्रकला महारानी सूर्यवती की भानजी हैं अतः यह भी उनसे मिलेंगी।

धीर मंत्री ने भी सेठ के विचारों को पसंद किया, और महाराज से मिलने की प्रतीक्षा करता हुआ अपने उतारे पर पहुंच गया। मित्र-गुणचन्द्र ने कुमार श्रीचन्द्र को इन-सारी बातों से सूचित कर दिया। कुमार भी मित्र के साथ कुछ गुप्त-मन्त्रणा करके वहां से उठा और भोजनशाला में जा पहुँचा। वहां सेठानी से माता जी! मुझे भूख लगी है लड्डू दीजिये कह कर भोजन करने बैठ गया।

वात्सल्यमयी माता ने बड़ी – प्रसन्नता से उसे थाल में बहुत सारे लड्डू परोसे। उसने अपनी पत्नियों उनकी सखियों आदि सभी को लड्डू बांटे और खुदने भी खाये। इस प्रकार अपने सारे कुटुम्ब के साथ–वैकालिक-

-दुपहरी करके वह कुमार श्रीचन्द्र अपने महल में आया। अपनी रियासत कणकोट्टपुर के मंत्रियों के साथ लिखा-पढ़ी के काम में भी गुणचन्द्र को नियुक्त किया दूसरे भी जिस-जिस को जिस जिस काम पर नियुक्त करना था, किया। इस प्रकार विदेश जाने से पहिले सारी तैयारी जो करनी थी, कर ली। महापुरुषों की महत्ता उनके विचारों की दृढ़ता और योग्य कार्य-सरमी को अवलम्बित हुआ करती है।

सूर्य अपने प्रकाश को समेटता हुआ पश्चिम की ओर जा पहुंचा। व्यापारी अपने ग्राहकों को निपटाते हुए दुकान से घर की ओर चलने की तैयारी करने लगे। गुमास्ते नौकरी बजाकर अपने बाल-बच्चों से मिलने की उत्कंठा से प्रसन्नता के साथ अपने स्वामियों की दृष्टि से ओझल होने लगे। धार्मिक लोग सूर्य—नारायण के अस्त होने के दुःख से रात्री-भोजन को पाप रूप मानकर दिन रहते-रहते भोजन-विधि से और जल-पान से निवृत्त होने लगे। संध्या की उपासना के लिये ब्राह्मण अपने गायत्री मंत्र जाप के साथ संध्योपासना करने लगे मन्दिरों में भगवान की आरती उतारने की तैयारी में बच्चे अपने प्रिय घण्टा-घड़ियालों को बजाने की धुन में मन्दिरों में पहुंचने लगे। संध्या के शंख फूंके जाने लगे। पक्षी दिन भर चुग्गा करके अपने घौंसलों को और नन्हे नन्हे बच्चों को चुगाने और प्यार करने लगे। गाय-भैंसों के टोले जंगलों से चरकर अपने मधुर दूध से अपने पालकों के पात्र भर कर जुगाली करने में लग गये। आकाश ताम्र वर्णी-लाल सूर्ख हो गया। बादल पहाड़-हाथी-घोड़ा आदि रूपों में परिणत होते और बिखरते हुए संसार की असारता के पाठ पढ़ा रहे थे अर्थात् पूर्णतया संध्या-वेला हो चुकी थी।

कुमार श्रीचन्द्र अपने विदेश-गमन के दृढ़ विचारों को कार्य रूप में परिणत करने पहिले, अपनी प्राण प्यारी चन्द्रकला के महल में उसकी आज्ञा पाने के लिये पहुंच गया।

हर्ष की अधिकता से उत्कण्ठित चित्तवाली चन्द्रमुखी चन्द्रकलाने अपने प्राणनाथ की पधरावणी में अपने चिरकाल के मनोगत संकल्पों की सिद्धि का साक्षात्कार किया। खूब घुल घुलकर मीठी प्यार भरी बातें की। आपस में उनका मनोमेल हुआ। वाणी में वे एक रस हुए। काया से भी उनने अद्वैत का आनन्द लिया। चन्द्र को पाकर कला पूर्ण प्रसन्न हो रही थी तभी

कुमार ने अपने मनोगत भाव उसे कहने शुरु किया।

प्रिये ? आज पिताजी ने मुझे वीणारव को रथ-दान करते हुए टोका। इस थोड़े से दान से भी वे रुष्ट होते हैं, तो बताओ ? मैं कैसे अपनी इच्छानुसार दान कर सकता हूँ। पिताजी ने आज से पहिले कभी कुछ न कहा, और मैंने भी उनकी आज्ञा का कभी उल्लंघन नहीं किया। परन्तु आजकी बात से मेरा दिल टूट गया। दान किये घोड़ों को मूल्य देकर वापस लेने का पिताजी का आग्रह मुझे ठीक नहीं मालूम दिया।

अयि चतुरे ! मैं मानता हूँ कि माता पिता और गुरु की शिक्षा अमृत से भी अधिक मूल्यवान् होती है- फिर भी उसे मैं मान नहीं रहा हूँ। अतः मैं पुण्य हीन हूं, क्योंकि आज मेरा मन भी हठी हो रहा है। देखो! पिता की आज्ञा से राम वनवासी हुए। पिता को सुख पहुंचाने के लिये भीष्म ने आजन्म ब्रह्मचारी रहना स्वीकार किया। पिता की आज्ञा से परशुराम ने अपनी ही माता का सिर काट लिया। अब तुम्हीं बताओं पिता की आज्ञा का उल्लंघन करने वाले मुझ ज़ैसे कृतघ्न की क्या सभ्य संसार में हँसी नहीं होगी ? कहा है—

तात मात गुरु स्वामी सिख
सिर धर करहिं सुभाय।
लह्यो लाभ तिन जनम को
ता बिन जनम गमाय।।

ऐसा होने पर भी मैंने जो कुछ भला या बुरा किया है, वह धर्म संकट में फंस कर किया है। मेरे सामने दो ही मार्ग थे एक पिता की आज्ञा का पालन, दूसरा अपने कहे वचन की रक्षा। इनमें से मुझे एक चुनना था। मुझे वचन–रक्षा का मार्ग ही अभीष्ट और मनस्तुष्टि वाला लगा। अतः मैंने पिता की आज्ञा का पालन नहीं किया है।

चन्द्रकला ने मन ही मन में अपने स्वामी की उदारता, गुरुजनों की भक्ति, वचन–रक्षा आदि की प्रशंसा करते हुए कहा स्वामिन्! दान-पुण्यादि कार्यों में आपकी जैसी बुद्धि है वह प्रशंसनीय है। इतने बड़े कुटुम्ब में सबकी बुद्धि एकसी नहीं होती कोई कुछ और कोई कुछ करना चाहते हैं। आप किसी बात की चिन्ता न करें। आपका सब तरह से कल्याण होगा। मैं मानती हूं भविष्य में आप एक बड़े राजाधिराज होंगे।

यह सुन उस दीर्घदर्शी कुमार ने प्रेम-ग्रन्थि के साथ साथ शकुन-ग्रन्थि भी बांध ली, और बोला-प्रिये ! मैं मानता हूं तुम्हारी सरस्वती सफल होगी। पर अभी मैं यहां स्वतंत्रता को खोकर अपनी उन्नति कैसे कर सकता हूँ ?। मैं आदरणीय गुरु–जनों का अनादर करके यहां रहना उचित नहीं समझता। अतः मैं विदेश जाना चाहता हूँ। मेरे ये सारे ऐश्वर्य और सुख भी न मालूम माता पिता या स्त्री-किसके भाग्य से प्राप्त हैं, इसका भी पता नहीं है। अतः भाग्य-परीक्षा के लिये भी विदेश जाना मेरे लिये उचित है। मैं कुछ दिनों में पृथ्वी के कौतुकों की देखकर यहां शीघ्र लौट आऊँगा।

श्रीचन्द्रकुमार के इन वचनों को सुनते ही चन्द्रकला छिन्न-मूला लता की तरह धड़ाम से पृथ्वी पर गिर पड़ी। उसका सारा शरीर पानी पानी हो गया। उसका अंतःकरण कोई अतर्कित दुःख से फटने लगा। भारी दुःख भार से वह रो पड़ी। विलाप करती हुई वह कहने लगी, देव ! आप यह क्या कह रहे हैं ? आपके चले जाने पर मेरे वियोग-दुःख का क्या पार होगा? लोग मुझे विष कन्या कहेंगे। पति के, सासु के, और श्वसुर के, दुःख का कारण बतायेंगे। ओ प्राणनाथ! आप यहीं रहें। आपको किस बात की कमी है? आपके हाथी, घोड़े, सेना और धन का कोई पार नहीं है। आपके बड़े भाग्य की परीक्षा कई बार हो चुकी है। उसमें कोई सन्देह बाकी नहीं है। इस प्रकार रोती-बिलखती चन्द्रकला को आश्वासन देते हुए कुमार ने कहना प्रारम्भ किया :—

कल्याणि ! तुम मेरे मन को जानने वाली, और बड़ी धीरज वाली होकर भी आज अपना धीरज खो रही हो, यह क्या? देवी ! रोओ मत। तुम-वीर क्षत्रियाणी हो। संसार के दुःखों को जानती हुई भी अनजान कैसे बन रही हो ? तुम्हारा कहना सब सच है, किन्त जो कुछ सुसराल वगैरह से मिला है वह मुझे रुचिकर नहीं हो सकता। मेरा महत्ता तो मेरी भुजाओं से उपार्जित धन से एवं उसके दान से ही हो सकती है। तुम पर मेरा बड़ा भारी स्नेह है, इसी लिये मैं मातापिता और कुटुम्बियों को न पूछ कर केवल तुम्हें ही पूछने-आया हूँ। अतः तुम रोना छोड़कर धीर मन से मुझे अनुमति प्रदान करो। जिससे मैं अपना मन चाहा काम-विदेश-गमन कर सकूं।

क्रमशः

।। श्री जिनाय नमः ।।

महानगर कोलकाता में शासन प्रवर्तिनी, दिव्याविदुषी, मरुधर ज्योति, तपस्वी चेतना सम्पन्ना साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी महाराज साहब का भव्य प्रवेश एवं समारोह

परम् आदरणीय युगप्रवर्तिनी, शासन प्रभाविका श्री विचक्षणश्रीजी महाराज साहब की आज्ञानुवर्तिनी शिष्या परम् मरुधरज्योति, दिव्य तेजस्विनी परमतम श्रद्धेया श्री मणि प्रभाश्रीजी म. सा. का चातुर्मास यापन के लिये कलकत्ता महानगर में दिनांक १५-०६-२००३ को भव्य प्रवेश सम्पन्न हुआ। सुबह ७.३० बजे बड़ा बाजार पंचायती मन्दिर से होते हुए श्री संघ के साथ आपका भव्य प्रवेश माणिकतल्ला दादाबाड़ी में हुआ। इस मंगल अवसर पर जैन समाज के सभी समुदायों के गणमान्य अतिथि उपस्थित थे। शासन प्रवर्तिनी महा प्रज्ञामयी श्री विचक्षणश्रीजी म. सा. के शताब्दी जन्म दिवस और उनकी अनुवर्तिनी श्री मणिप्रभाश्रीजी का कोलकत्ता महानगर में प्रवेश एक भव्य संयोग बना। इस मौके पर श्वेत वस्त्रावृता तपस्विनियों के पावन कण्ठ स्वर फूट निकले। श्रीहेमप्रज्ञाश्रीजी ने श्री विचक्षणश्री जी म. सा. की स्मृति में देशना देकर अपने मधुर कण्ठ से भक्ति संगीत द्वारा अपनी श्रृद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर साध्वी प्रमुखा मणि प्रभाश्रीजी महाराज सा. श्री की दिव्य देशना को सुनने नागपुर, धमतरी, रायपुर, इन्दौर आदि अनेक जगहों से बड़ी संख्या में श्रावक मौजूद थे। वहाँ उपस्थित हजारों की संख्या में एकत्रित समुदाय एकचित्त होकर महाराज साहब के प्रवचन को सुन रहा था। इस अवसर पर श्रेष्ठीवर्या पूनम चन्दजी डाकलिया की धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मीबाई डाकलिया पुत्र श्रीनिर्मल कुमारजी सुमतीचन्दजी के तरफ से केवल्यधाम तीर्थ (रायपुर) में एक मन्दिर निर्माण की घोषणा की है। केल्यधाम के अध्यक्ष श्री जसराजजी बरड़ीया रायपुर, श्रीलालजी लोढ़ा दुर्ग द्वारा डाकलिया परिवार का बहुमान किया गया।

इस मंगल प्रवेश के अवसर पर सर्वप्रथम श्रीमती भंवरीबाई रामपुरिया ने गुरुवर्या श्री विचक्षण श्रीजी महाराज साहब के चित्र पर माल्यार्पण किया व साध्वी श्री विद्युतप्रभाश्रीजी व हेमप्रज्ञा श्रीजी ने प्रार्थना द्वारा सभा का शुभारम्भ किया। श्रीदेवेन्द्र कुमारजी बोथरा अध्यक्ष चातुर्मास प्रबन्ध समिति, स्वागताध्यक्ष श्रीप्रेमचन्द्रजी मोघा, प्रवीन कार्यकर्ता श्रीज्ञानचन्दजी लूणावत, श्रीसोहनराजजी सिंघवी, श्रीमती लता बोथरा और श्रीकान्तिलालजी मुकीम (मंत्री, चातुर्मास प्रबन्ध समिति) ने अपने-अपने वक्तव्य रखे। श्रीमोहनलालजी बरड़िया एवं श्रीमती रेखा लोढ़ा ने अपने मधुर भजनों से जनसमूह को मोह लिया। समारोह के पश्चात् दादागुरूदेव की पूजा एवं स्वधर्मी वात्सल्य का आयोजन किया गया।

समारोह को सफल बनाने में सकल संघ के कार्यकर्ताओं ने सम्पूर्ण रूप से सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

सकल श्रीसंघ
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ कोलकाता
चातुर्मास प्रबन्ध समिति

संकलन—

लकड़हारा का त्याग

दिनभर लकड़ियों की टाल पर लकड़ियां चीरने वाला लकड़हारा जैन साधुओं की दिनचर्या से बड़ा प्रभावित हुआ। अक्सर वह अवकाश के समय जैन साधुओं की संगत में जाने लगा। जैन साधुओं के प्रवचनों का इस पर इतना असर पड़ा कि इससे जैनाचार्य श्री सुधर्मा स्वामी से जैन साधु बनने हेतु दीक्षाग्रहण की।

लकड़हारा जैन मुनि बन गया। इसके जैन मुनि बनने के बाद इसने जैन शास्त्रों का बड़ी लग्न एवं निष्ठा से अध्ययन किया। जिसके कारण जैन धर्म शास्त्रों का इसे काफी अच्छा ज्ञान हो गया। जैन शास्त्रों के ज्ञान के साथ इससे जैन साधुत्व की आचार संहिता को भी कड़ाई से पालन करने लगा। जिसके कारण इसकी जैन साधुओं एवं जैन श्रावक श्राविकाओं में अच्छी प्रतिष्ठा बन गई। सभी इन्हें मान सम्मान देने लगे।

लकड़हारा से जैन मुनि बनने पर अजैन लोग जब भी यह मार्ग से गुजरते तो इसका उपहास करने लगते। लोग कहते कि भूख एवं गरीबी से तंग आकर जैन साधु बना। कोई कहता गरीबी से छुटकारा पाने के लिये इसने अच्छा वेष धारण किया। कई लोग कहते बेचारे के पास खाने को लाले पड़ते तो मरता क्या नहीं करता आखिर जैन बनकर छुटकारा पाया। जितने मुंह उतनी उपहास भरी बाते सुनकर जैन मुनि लोग उपहास से तंग आ गया।

अजैन लोगों के उपहास का मुनि के मानस पर बुरा प्रभाव पड़ने लगा और उसका शास्त्रों के अध्ययन में भी मन नहीं लगने लगा। जैन साधुत्व की क्रियाओं में भी वह आलस्य करने लगा। जैन मुनि की इस स्थिति को देख जैनाचार्य श्री सुधर्मास्वामी ने इसका कारण पूछा तो इसने अजैन भाई बहनों द्वारा उपहास करने की जानकारी दी।

जैनाचार्य श्री सुधर्मास्वामी ने लोगों को जैन मुनि के उपहास नहीं करने का उपदेश दिया लेकिन इससे लोग अधिक भड़क गये और जैन मुनि के उपहास के साथ साथ जो बाते नहीं कहनी होती वैसी अनर्गल बाते करने लगे। इससे जैनाचार्य एवं जैन मुनिवर सभी दुखी एवं परेशान होने लगे। जिसकी जानकारी जैनधर्म पालक राजा को हुई। राजा ने अपने धर्म गुरुओं को लोगों द्वारा किये जाने वाले उपहास को रोकने के लिये कई प्रयास किये लेकिन राजा को उसमें सफलता प्राप्त नहीं हुई। आखिर राजा ने नगर के प्रमुख चौराहे के मध्य में तीन कीमती रत्नों की ढेरियां लगाई और नगर में ढूढ़ी पिटवा की जो कोई राजा की रखी तीन शर्तों को मानेगा उसे रत्नों की ढेरियां दे दी जायेगी।

राजा की इस घोषणा को सुनकर नगर के हजारों लोग नगर के मध्य आये विशाल चौराहे पर एकत्रित हुए। तब राजा ने लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा–चौराहे के मध्य तीन रत्नों की ढेरियां बनी हुई है। जिसमें जो कोई आजीवन तक आग को नहीं छूएगा उसकी एक रत्न ढेरी होगी। जो आजीवन तक किसी स्त्री को नहीं छुएगा उसके एक रत्नों की ढेरी दी जायेगी इसी प्रकार जो कोई आजीवन तक कच्चे पानी को नहीं छुएगा उसे भी एक रत्न की ढेरी दी जायेगी। राजा की इस विचित्र शर्तों को सुनकर सब लोग एक दूसरे की बगले झांकने लगे और कोई भी एक भी शर्त को मानने के लिये आगे नहीं आया। इस बीच जैन मुनि गोचरी लाने के लिये भीड़ के पास में से गुजरे। उन्होंने लोगों की भीड़ का कारण पूछा तो राजा की विचित्र शर्तों एवं बेकीमती रत्न ढेरियां शर्तें मानने वाले देने की बात बताई।

जैन मुनि ने जब इन विचित्र शर्तों की बात सुनी और भीड़ में से आगे आकर राजा को कहा–राजन ! मैं आपकी सभी शर्तें मानने को तैयार हूँ। लकड़हारे को जैन मुनि वेश में देखकर लोग

भौचक्के हो गये। राजा ने अपनी शर्ते मानने के उपलक्ष में जैन मुनि को तीनों रत्नों की ढेरियों को उठाने के लिये कहा। तब जैन मुनि ने कहा– राजन! जब से मैंने जैन मुनि का वेश धारण कर लिया तब से रुपया, पैसा धन, दौलत के साथ संसार के सारे सुखों का मैंने त्याग पत्र लिया है। आपकी यह बेशकीमती रत्नों की ढेरियां मेरे लिये धूल समान है।

जैन मुनि ने जब रत्नों की ढेरियां को धूल बताई तो लोग इस जैन मुनि (लकड़हारा) के त्याग की प्रशंसा करते थक नहीं रहे थे। जो लोग लकड़हारा के जैन मुनि बनने पर उपहास किया करते थे वे सभी इनके चरणों पर पड़कर क्षमा याचना करने लगे। राजा सोचने लगे कि लोग जैन मुनिया का भविष्य में लोग उपहास नहीं करेंगे। इस दृश्य को देखकर अति प्रसन्न हुए।

भूरचन्द जैन,
जूनी चौकी का वास,
बाड़मेर (राजस्थान)

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: (O) 2247-6874, (Resi) 2246-7707

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071
Ph: 2288 1565 / 1603

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box:16127,
Kolkata -700 017
Ph: (033) 2240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 2240 0098, 2247 1833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goalpara, Assam

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Kolkata - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 2235 0623, (Resi) 2239-6823

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 2238-8677/1647, 2239-6097

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2348-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Ph: (O) 2282-4649, (Resi) 2247-2670

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata, Ph: 2464-1186,

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071
Ph: 2247-7450/5264

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2238-4755, (Resi) 2238-0817

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2233-1766, 2238-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 2355-9641/7196

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007,
Ph: 2239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203 /1 M. G. Road, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2238-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane,
Kolkata - 700 026, Phone : 2476-1533

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East
Kolkata - 700 069

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Phone : (Off) 2247-7880, 2247-8663
(Res) 2247-8128, 2247-9546

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 2249-0103

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 2235-2076, 2235-5701

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

SPACE & WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 2242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Kolkata - 700 001 Fax : 2242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Phone : 001-217-355-0174/0187
e-mail : doogar@uiuc.edu

SUBHASH & SUVRA KHERA
6116, Prairie Circle
Mississauga LS N5Y2
Canada
Phone : 905-785-1243

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

अ angan
Rajasthan Village Theme Resturant at Swabhumi
89/c, Narkeldanga Main Road, Kolkata - 700 054
Phone : 2359 2031, e-mail : www.jiggis.com

PRITAM ELECTRIC & ELECTRONIC PVT. LTD.
Shop No. G- 136, 22, Rabindra Sarani,
Kolkata - 700 073, Phone : 2236-2210

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

RABINDRA SINGH NAHAR
40/4A, Chakraberia South, Kolkata - 700 020
Phone : (O) 2244-1309, (R) 2475-7458

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

VEEKEY ELECTRONICS
Madhur Electronics, 29/1B, Chandani Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140
(Resi) 2352-8387/9885

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 2242-4483/9181, (O) 2238-1396/1871
Fax : 2231-2151, 2666-6013

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2220-5229/5121

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2230-1329, 2232-1033
Fax : 91-33-2302413

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C., Kolkata - 700 019
Phone : 2287-0448

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. SHREE SILK STORE
House of :
Banarasi Sarees & Velvet Articles etc.
P-25, Kalakar Street, Jain Katra
Kolkata - 700 007
Phone: 2268 2671, 666 4422

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

M/S. B.C. JAIN JEWELLER'S (PVT.) LTD.
Govt. approved valuer for Jewellery.
Director: Bimal Chand Jain/Vikash Jain/Vivek Jain
39, Burtolla Street, Kolkata - 700 007

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane, Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2239-6241/2950 (O) 2239-0581

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone: 2232 3876

SHRI MANILAL RAJENDRA KUMAR JAIN (DUSAJ)
Dealers : Diamond, Precious Stones, Semi Stones &
Readymade Ornaments,
Phone: 2237 5869/6476
(Mobile): 98301017091, 9830142191

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
Burtala, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2238-0900 (M) 9830094325

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone: (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985,
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadalia@usa.net

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre
19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 5342535
Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

WHILE PURCHASING HEASIAN, SACKING, YARN AND DECORATIVE FURNISHING FABRICS & OTHER JUTE PRODUCTS, PLEASE INSIST ON QUALITY PRODUCTION.

We are, always ready to meet the Exact type of your requirement.

AUCKLAND INTERNATIONAL LTD.

(UNIT : AUCKLAND JUTE MILLS)

"KANKARIA ESTATE"

6, Little Russel Street,
Kolkata - 700 071

A RECOGNISED EXPORT HOUSE

Cable : SWANAUCK, KOLKATA
Telex : 212396 AUCK IN
Codes : BENTLEY'S SECOND
Phone: 22479921/9720,22402683

Registered Office &
'JUTE MILL' at jagatdal 24-Parganas
BHATPARA 81-2757/2758/2038

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan , Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia,

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin - 742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No.: 53232
Cal. Phone: No.: 033 2230 0432, 2522-1580

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbus would have feared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50⁰ C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL" 2226-0881
Fax: + 91-33-245-7591 2226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN 2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra

Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

卐

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 2514-4496, 2513-1086, 2513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in

With Best Compliments..... ?

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 2229-7346/4553, 2226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

In

Loving Memory of their parents

Late, Shree Phool chandji Kharad

&

Late, Smt. Narangi Devi Kharad

卐

From :-

M/s Phool Chand Kharad & Sons

21, Kali Krishna Tagore Street

Kolkata - 700 007

Phone : 2233-1609, 2239-8628

M.M. & P.O./W.B./R.N.P.–45/2003
VoL. XXVII. NO. 5. TITTHAYARA August 2003
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचानी चाहिये।

卐

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666 7212/7225